प्रकाशकीय

श्री ठाकुरदास वग का यह 'अपना राज्य' मूल मराठी 'ग्रामराज्य' का हिन्दी रूपान्तर है। प्रस्तुत पुस्तक मे नौ प्रकरणो द्वारा लेखक ने ग्राम-दान की समग्र विचारधारा का सरल और सुबोध भाषा एव शैली मे प्रतिपादन किया है। ग्राम-दान-क्राति की पूर्वभूमिका के रूप मे भूदान का ऐतिहासिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। ग्राम-दान और ग्राम-राज्य के स्वरूप पर योजनापूर्ण प्रकाश डालते हुए 'शका-समाधान' अध्याय मे ऐसे अठारह प्रश्नो के मार्मिक उत्तर दिये गये है कि घुमा-फिराकर आज के इस विषय के सभी प्रश्न इन्ही अठारह प्रश्नो मे बैठ जाते और उनके उत्तर इन्ही उत्तरो मे आ जाते है। अन्तिम 'सत्तावन की पुकार' श्रीमान्-गरीब, युवक-युवतियाँ, ग्रामीण-नागरिक, सभीमे नवचेतना भरनेवाली भाषा मे ग्रथित है। आशा है, यह पुस्तिका ग्राम-दान और ग्राम-राज्य की मूल भूमिका को समझने मे समुचित सहायक सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

अनुक्रम

अपना राज्य

अंधकार से प्रकाश की ओर : १ :

हमारा यह देश गाँवो का देश है। भारत को स्वतत्र हुए दस वर्ष हो गये है। आज हमारे देश की हालत क्या है ? भारत मे आज भी पर्याप्त अनाज पैदा नही होता। इसीलिए करोड़ो रुपयो का अनाज वाहर से मँगाना पडता है। गरीबी दूर नही हुई। सवको काम नही मिला। जहाँ-जहाँ शराववदी हुई है, वहाँ गाँव-गाँव बे-रोकटोक धडल्ले से शरावखोरी चल रही है। गाँव-गाँव शराव वनाने का एक नया ही धधा शुरू हो गया, ऐसा लोग कहते है। स्पृश्यो और नव-वौद्धो की भिडत हो रही है। जवान लडके सामाजिक सुधार की वात कान पर ही नही आने देते। जहाँ लडको की ही यह हालत है, वहाँ लड़कियो की क्या विसात ? मजदूर मन लगाकर खेतो, कारखानो मे या कही भी काम नही करते, यह तो नित्य का ही अनुभव है। कितनी ही सुरक्षितता रखिये या चोर को कोई भी सजा दीजिये, चोरियाँ वद नही हुई। 'साहूकार को हृदय नही होता' इस प्रकार उन्हे गाली देने का कार्यक्रम चारो ओर अवाध रूप से चालू है। लोभ तो किसीका भी छूटा नही। इसलिए हर आदमी दूसरे को

गरीब बनाकर स्वय धनी हो रहा है। स्पर्धा मे तो यह सब चलेगा ही, यही समझकर सब चलते हैं।

इसी तरह देहाती लोगो का जीवन भी आज कितना चिन्ता-ग्रस्त और पराधीन बन गया है! 'इस वर्ष फसल कैसी क्या होगी', यह चिन्ता तो पुराने जमाने से चली ही आ रही है। अब यह एक नयी चिन्ता लग गयी है कि अनाज और कपास का भाव क्या निकलेगा? कपडा, लोहा, शक्कर, तेल आदि के भाव क्या रहेगे, यह चिन्ता तो है ही। शिक्षण मे कितना, क्या खर्च आयेगा, कौन जाने! पढाई के बाद लडके को बाप का धधा करने मे शर्म लगती है और शहर मे नौकरी मिलती है या नही, किसे मालूम, साहूकार से किस ब्याज पर कर्ज मिलेगा, तकावी मिलेगी या नही और मिलेगी भी, तो उसका भाव (रिश्वत) क्या है—यह चिन्ता है ही। सरकार और ग्राम-पचायत कौन-कौन से कर लगाकर हमसे कितना पैसा खीचनेवाली है, कौन जानता है! फालतू समय मे किसानो, मजदूरो और कारीगरो को हमेशा काम मिलेगा या नही, इसकी गारटी कौन दे? इस प्रकार व्यापारी, साहूकार और सरकार के बधनो से आज का ग्रामीण पूरी तरह जकड गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक सारा जीवन अगले दिन की चिन्ता मे बीतता है। मृत्यु के सिवा किसी बात का भरोसा नही। चिन्ता की काली छाया हरएक के चेहरे पर है। क्या है यह जीवन! कब मिटेगी यह चिन्ता? कब दूर होगी यह अनिश्चितता?

एक ओर हिन्दुस्तान का, प्राय सारे देहातो का यह चित्र है और दूसरी ओर?

उत्तर प्रदेश मे मँगरौठ नामक एक गाँव है। यही भारत का पहला ग्रामदान है। यहाँ के किसानो ने अपनी सारी जमीन भूदान मे अर्पित कर दी है। पहले वहाँ इतना ही अनाज पैदा होता था कि सालभर मे केवल छह महीने मुश्किल से गुजर-वसर हो सके। ज्वार भी सालभर खाने को नसीव न होती थी। ग्रामदान के वाद खेती मे सुधार होने लगा। सवकी शक्ति और बुद्धि गाँव की पैदावार वढाने मे लग गयी। हर आदमी ने केवल अपने तई सोचना छोड़ दिया—हर आदमी गाँव का हित देखने लगा। परिणाम यह हुआ कि अव इतनी पैदावार होने लगी कि सालभर चलने पर भी वच जाय। घर-घर गेहूँ की रोटी वनने लगी है। ग्रामदान का अगर इन लोगो ने यह अर्थ लगाया हो कि 'फाका करने की जगह अव घर-घर गेहूँ की रोटी है', तो इसमे आश्चर्य की कौन-सी वात है ? यही हाल उडीसा के 'गराडा' नामक गाँव का है। इस गाँव ने दो वर्ष पूर्व ग्रामदान का कदम उठाया। वहाँ के लोगो ने श्रम-दान से तालाव खोदा और जापानी पद्धति की धान-खेती की। एक वर्ष मे ही वहाँ की पैदावार तिगुनी वढ गयी है। विहार के 'सेन्हा' गाँव मे खाने-भर का अनाज भी पैदा न होता था। लेकिन आज हालत यह है कि सवकी आवश्यकताएँ पूरी होकर अन्न वाहर जा रहा है।

अकेली गाँव की वात लीजिये। उड़ीसा में गंजाम जिले के इस छोटे-से गाँव ने ग्रामदान करने पर कहा : 'हम सव काली-माँ (धरती माता) के पुत्र हैं। इसलिए हम सव भाई-भाई हो गये, तव आपस मे छुआछूत कैसे चलेगी ? हम शराव न पीयेंगे !'

शराब के घडे उन्होने फोड डाले। यही बात विदर्भ के 'वाई' गाँव की है। वाई विदर्भ का पहला ग्रामदान है। अमरावती जिले की 'मोर्शी' तहसील मे यह पडता है। इस वर्ष ३० जनवरी को यहाँ ग्रामदान हुआ। वहाँ दस-बारह हजार रुपयो की शराब हर साल तैयार होती और लोग उसे पीते थे। अब वहाँ शराब बनाना और पीना, दोनो बद हो गये है।

स्पृश्यो और अस्पृश्यो के सबध देखने के लिए हम फिर अकेली का ही उदाहरण ले। अकेली के अस्पृश्य लोगो को कुछ स्वार्थी लोगो ने उसका दिया। इस कारण उन अस्पृश्यो ने ग्रामदान के बाद वितरण मे प्राप्त जमीने लौटा दी। उस समय गाँव के स्पृश्य उनके पास पहुँचे और उनसे कहा कि 'तुम्हारा धर्म तुम्हारे साथ और हमारा धर्म हमारे साथ। अगर आप जमीन न ले, तब भी उसे हम आपकी ही मानेंगे। आपकी ओर से उसकी मशक्कत हम मुफ्त मे ही करेंगे। जो पैदावार होगी, उसे हम आपके घर पहुँचा देंगे।' वज्र का हृदय भी ऐसे बर्ताव से पिघल सकता है, तब अकेली के अस्पृश्य तो आदमी ही थे। इस उत्तर से वे शरमिंदा हो गये। उनमें का कलि भाग गया। उन्होने जमीन पर मेहनत करना तय किया। पहले गाँव 'अकेली' याने 'एकाकी' था। अब वह एकाकी नही रहा। ग्रामदान हो गया, इसलिए 'अ-कलि' बन गया। कलि भाग गया। इस प्रकार अकेली मे जब छुआछूत और शराब बंद हो गयी, तब भगवान् ने उसे कसौटी पर कसा। भगवान् कभी-कभी भक्तो की कसौटी करता रहता है। जो कसौटी करता है, वही भक्तो को

कसौटी से पार उतरने का बल भी देता है। गाँव के चार लड़के विवाह-योग्य हो गये। दूसरे गाँवो के लोगों ने तय किया कि जिन लोगो ने छुआछूत, शराब और जमीन की मालकियत छोड दी, उन्हे हम अपनी कन्याएँ न देगे। बस, अकेली पर सामाजिक बहिष्कार शुरू हो गया! फिर एक चमत्कार हुआ। नजदीक के गाँव की चार सयानी लडकियाँ एक दिन अकेली मे आ पहुँची। उन्होने कहा कि 'जो शराब नही पीते और जिन्होने सारी जमीन गाँव की कर दी, उन्ही युवको से हम विवाह करेगी।' विवाह हो गये। उस दिन 'अकेली' के आनन्द का क्या पूछना!

वाई के लोगो ने सामूहिक खेती करना तय किया। कल तक मन लगाकर काम न करनेवाले मजदूर थे वे! उनमे एक रात मे फर्क आ गया। सबकी मालकियत होते ही उनके मन अभिमन्त्रित हो गये। आज वाई के सारे लोग सवेरे चार बजे घटी बजने के साथ उठ जाते है। पाँच बजते ही खेतो में काम पर हाजिर रहते है। रात को आठ बजे प्रार्थना होती है, उसमे सब लोग हाजिर रहते है। प्रार्थना के बाद दूसरे दिन के काम की योजना बनाते है। वहाँ के लोगों ने इसी वर्ष दो सौ एकड़ पड़ती जमीन को जोता है। पहले की चार सौ एकड जमीन मे तो मशक्कत होती ही है।

उड़ीसा के बालेश्वर जिले मे 'पाखरा' नामक एक गाँव है। वह भी ग्रामदानी हो गया है। अब तक जमीन का वितरण नही हुआ था। वहाँ लोगों ने एक पेशेवर चोर को पकड़ा। उसे ग्राम-पचायत के सम्मुख हाजिर किया गया। चोर ने अपराध

स्वीकार कर लिया। और आप जानते है, पचायत ने चोर को क्या सजा दी ?—'इसे तीन एकड जमीन देकर किसान बनाया जाय !'

उडीसा मे अधिक-से-अधिक ग्रामदानी गाँव कोरापुट जिले मे मिले हैं। उन गांवो मे गाँव के लोगो द्वारा 'को-ऑपरेटिव' (सहकारी) दूकानें खोली गयी हैं। इन दूकानो मे न तो ठीक-से कमरे है और न दरवाजे, फिर कहाँ के ताले ! हर तीन महीने पर हिसाब और जाँच करने पर भी कोई माल चोरी गया हो, ऐसा दिखाई नही दिया। ऐसी बातें सुनने पर प्रतीत होने लगता है कि मानो ग्रामदान कलियुग मे सत्ययुग ला रहा है।

ग्रामदानी गाँवो मे लोगो पर के पुराने कर्ज का भार साहूकारो को समझाकर कम किया जा रहा है। कुछ साहूकारो ने तो अपने कर्ज की रकमे छोड भी दी है। उडीसा के मानपुर के ग्रामदानी गाँव मे एक साहूकार ने कर्ज माफ कर, रेहन रखी हुई जमीन भी वापस कर दी। सर्वापुर नामक एक दूसरे गाँव के साहूकार ने १२७६) का कर्ज छोड दिया और दस्तावेज फाड डाला !

एक ओर साहूकार कर्ज छोड रहे है, तो दूसरी ओर भूमि के पुर्नवितरण से अनेक नवीन दृश्य दिखाई दे रहे है। ऐसे पुर्नवितरण मे कल तक जो पचास एकड का मालिक था, उसे वितरण के बाद दस एकड जमीन मिली है। इसी तरह जिसके पास कल तक इचभर भी जमीन न थी, उसे बारह एकड जमीन (बडा कुटुम्ब होने के कारण) मिली है। दोनो ने ही प्रसन्नतापूर्वक जगन्नाथ के प्रसाद को स्वीकार किया है। दूसरी ओर

गरीवो को ज्यादा जमीन मिलने की संभावना होने पर भी गरीवो ने प्रमाण की अपेक्षा कम जमीन ली और अपने गाँव के श्रीमान् को ज्यादा जमीन देकर उस पर प्रेम की वर्षा की !

उडीसा मे ग्रामदान से पूर्व हजारो लोगो के पास पहनने को एक ही वस्त्र था। वे रात को उसे धोते और दिन मे पहनते ! अब कताई कर ऐसे लोग अधिक कपड़ो का उपयोग करने लगे है। घर-घर चरखे की गुञ्जार चल पड़ी है। नयी तालीम की पाठशालाएँ शुरू हो रही है। 'यज' नामक सूजाक जैसा भयानक रोग कावू मे आ रहा है। अनेक गाँवो मे से उसका पूर्ण उच्चाटन हो गया है। मँगरौठ का नष्टप्राय चर्मोद्योग अब विकसित होने लगा है। चर-संडास शुरू हो गये हैं। अब मँगरौठ गाँव मे भगी नही रहा है। गाँव स्वच्छ हो गया है। बढई, कुम्हार आदि गाँव में सिखाकर तैयार किये गये हैं।

देशभर चारो ओर निराशा और वेजवावदारी का मरुस्थल होने पर भी ये छोटी-छोटी हरियालियाँ कहाँ से आयी ? घोर कलियुग मे सत्ययुग की याद दिलानेवाले ये दृश्य कैसे दिखाई पड रहे हैं ? यह ग्रामदान का परिणाम है। यह एक सत की छह वर्ष तक सतत की गयी तपश्चर्या का परिपाक है। भूदान-यज्ञरूपी वेल का 'ग्रामदान' फल है। ग्रामदान एक क्रान्ति है, यह कोई सर्वसाधारण सुधार नही। इसलिए ग्रामदान की क्राति की ओर मुडने से पहले हम सुधार और क्राति को समझ ले।

• • •

क्रान्ति और सुधार : २ :

भूदान, ग्रामदान और ग्रामराज्य—यह क्राति का कार्यक्रम है, सुधार का नही। इसलिए 'क्राति' याने क्या और 'सुधार' अथवा विकास याने क्या, इसे हमें समझ लेना चाहिए।

सुधार, विकास अथवा उत्क्राति—इन सबका एक ही अर्थ है। सुधार धीरे-धीरे होता है और क्रान्ति फौरन। क्रान्ति को गति और तीव्रता की अपेक्षा है। भूदान-यज्ञ क्रान्ति है, क्योकि इस आन्दोलन द्वारा जल्दी-से-जल्दी, सत्तावन मे समता लानी है। पाँच-पचास वर्षो मे यह कार्यक्रम पूरा नही करना है।

लेकिन जल्दी होनेवाली कोई भी बात क्राति नही होती। हम बैलगाडी की अपेक्षा विमान से बहुत जल्दी जाते है, इसलिए विमान से जाना कोई क्रान्ति नही। क्रान्ति मे लोगो की समझ, धारणा, कल्पना या मूल्य बदलते है। पहले और आज भी हम मानकर चलते है कि मालिक-मजदूर-सबध रहेगे ही। मालिक और मजदूर ठीक-ठीक वर्ताव करें और इतना हो जाय, तो आज बहुत-से लोग खुश हो जायेंगे। यह है मालिक-मजदूर-सबध मे सुधार। किन्तु क्रान्तिकारी विचार करता है कि एक दूसरे को मजदूर क्यो रखे, स्वय मालिक क्यो न बने? अर्थात् वह पुराने मालिक-मजदूर-सबध की जड पर ही प्रहार करता है। मालिक-मजदूर-सबध को सुधारना सुधार है, किन्तु मालिक-मजदूर-सबध को नष्ट कर देना क्रान्ति होगी।

हम एक दूसरा उदाहरण ले। आज जगह-जगह मेहतर हडताल करते है। वेतन-वृद्धि, छुट्टियाँ, अच्छे औजार आदि उनकी माँगे है। यह सब सुधार का कार्यक्रम है। किन्तु क्रान्ति का कार्यक्रम यह है कि हर आदमी अपनी-अपनी सफाई का काम करे और समाज मे कोई भी मेहतर या भगी न रहे। 'मेहतर ही न रहे' कहनेवाला मूल कल्पना को ही खतम करता है। उसके स्थान पर नयी कल्पना दाखिल करता है। सबको सफाई करनी चाहिए, सबको भू-माता की सेवा करनी चाहिए—इससे जीवन के मूल्य ही बदल जाते है।

मूल्य-परिवर्तन के लिए लोगो के मन बदलने पडते है। क्योकि उनके मन मे घर की हुई, पुरानी सडी रूढियाँ, कल्पनाएँ, समझ आदि को दूर कर युगानुकूल नवीन मान्यताओ की स्थापना करनी होती है। सुधार के कारण भी आदमी के मन मे फर्क पड़ता है, पर वह उतना मूलगामी नही होता। इसलिए कोई भी क्राति पहले मनुष्य के मन मे होती है। बाद मे उसका प्रतिबिम्ब बाहरी समाज-रचना पर अकित हुआ करता है।

मूल्य बदलने से समाज की पुरानी रचना बदलती और नयी निर्माण होती है। समाज ज्यो-का-त्यो रह जाय, थोडा-सा अन्तर पडे—जख्म पर जरा मलहम-पट्टी हो जाय, तो वह विकास का कार्यक्रम हुआ। उदाहरण के लिए आज की पच-वर्षीय योजना ही ले लीजिये। इस योजना मे कहा गया है कि खेती के मजदूरो की कम-से-कम कितनी मजदूरी रहे, यह तय होना चाहिए। मजदूरो को इससे थोड़ा सुख मिलेगा। कुछ वेतन-

वृद्धि होगी । लेकिन इससे मजदूर मजदूर ही रहेगा और मालिक मालिक ही । किन्तु भूदान-यज्ञ मे से जमीन की मालकियत खतम हो जाने से कोई भी किसी पर मालकियत न लाद सकेगा । यही क्राति है ।

एक बार समाज-रचना मे क्राति हुई कि फिर कानून, राजनीति, तत्त्वज्ञान, धर्म आदि पर भी क्राति का उचित परिणाम और सबमे उचित परिवर्तन होता है । जमीन की मालकियत मिट जाने पर फिर सपत्ति का भी कौन मालिक रह जायगा ? धर्म की दास्य-भक्ति के बदले सख्य-भक्ति अधिक उपयुक्त प्रतीत होने लगेगी । मालकियत के हक के आधार पर बने हुए सारे कानून बदल जायँगे । इस तरह क्राति शुरू होती है जीवन के एक विभाग से, पर व्याप्त हो जाती है सम्पूर्ण जीवन मे । सुधार मे ऐसा नही होता । सुधार उसी विषय तक सीमित रहता है । उसका परिणाम वही समाप्त हो जाता है ।

क्राति होने पर सुधार तेजी से होते है । जब तक क्राति नही हो जाती, तब तक सुधार भी कोई बहुत आगे नही जा सकता । जब तक समाज मे जमीन और सपत्ति के वितरण की क्राति नही हो जाती, तब तक स्कूल, सडकें, अस्पताल, कृषि-सुधार आदि विकास के कार्यक्रम बहुत आगे नही जाते । हर बात के लिए पैसा नही, लोगो का मानस तैयार नही, कोई जवाबदारी से काम नही करता—ये ही कारण सामने आयेंगे, जिनसे सारी प्रगति रुक जायगी । लेकिन जहाँ एक बार लोगो के मन बदल जायँ और आर्थिक क्राति हो जाय, तो फिर कृषि-सुधार, स्कूल, अस्पताल

आदि विकास-कार्य अपने-आप होगे। कारण सब लोग मन लगाकर काम करेंगे। उन्हे यह सारा काम सरकार का या दूसरो का न लगकर अपना ही लगेगा। इसीलिए क्राति होने पर सुधार की गति कई गुना हो जाती है। फिर कुछ समय बाद समाज-रचना पुरानी पड जाती है, जिससे सुधार की गति मद पड जाती है। इसलिए उस रचना को भी बदलना पडता है, यानी क्राति करनी पडती है। पुन. सुधार भी पूरे वेग से होने लगते है।

क्राति का मतलब है, जनता के विचारों मे आमूल परिवर्तन! यह शुद्ध साधनो से ही हो सकता है। जबर्दस्ती से तो बाह्य-रचना बदलती है, पर विचार लादे नही जा सकते। कितनो को यह भ्रम हो गया है कि क्राति जबर्दस्ती से हो सकती है। यही कारण है कि ऐसी जबर्दस्तियों के खिलाफ आन्दोलन या तूफान खडे होते है। इसे 'प्रतिक्राति' कहते हैं। क्राति का अर्थ आमूल परिवर्तन है। फिर अगर पुराने जमाने मे क्राति करनेवालों ने गलती से जबर्दस्ती के साधनो का उपयोग किया हो, तो क्या हमे उनमे परिवर्तन न करना चाहिए? सुधारो मे भी शुद्ध ही साधन रहते है।

आज हमारे देश मे क्या चल रहा है? पंचवर्षीय योजना चालू है। कुछ विधायक कार्यकर्ता स्वतत्र रूप से और संस्थाओं द्वारा भी खादी, नयी तालीम, ग्राम-सेवा आदि सेवा-कार्य कर रहे है। सरकार की ओर से सड़कें, नहरे, बाँध, बिजली-उत्पादन, कारखाने, तकावी, स्कूल, अस्पताल आदि सुधार और विकास के

अनेक कार्य शुरू हैं। किसान-सभाएँ और मजदूरो के 'यूनियन' वेतन-वृद्धि, छुट्टियाँ आदि माँगकर मजदूरो का जीवन सुखी करने का यत्न कर रहे हैं। लेकिन इन सब सुधारो से वर्तमान पूँजीवादी समाज-रचना बदल नही सकती। धनवान् धनवान् ही रहेगा। गरीवो की गरीवी किंचित् दूर होगी। कदाचित् उतना भी न होगा, क्योकि क्राति के पूर्व सुधारो से कभी-कभी मूल रोग और अधिक बढ जाता है। आज के समाज में तकावी दी जाय या सुधार लागू किये जायँ, तो भी उनका लाभ ऊपर के वर्गो को ही मिलता है। पैसे के पास ही पैसा जाता है। जिनके पास कुछ नही है, उन्हे इन सुधारो से कोई लाभ नही मिलता। जिसके पास खेत नही, उसे आर्थिक मदद भी नही मिलती। गरीब आदमी स्कूल का लाभ कैसे उठा सकता है ? उसे तो अपने वच्चे को पशुओ के पीछे ही भेजना पडता है और लडकी के जिम्मे घर मे छोटे-छोटे वच्चो को सँभालने का काम आता है।

दूसरी पचवर्षीय योजना मे पाँच हजार आबादी के नीचे-वाले गाँवो पर जो रकम खर्च होनेवाली है, उससे पाँचगुनी रकम पाँच हजार जनसख्या से ऊपरवाले कसवो और शहरो पर खर्च होनेवाली है। काग्रेस के मत्री श्री श्रीमन्नारायणजी कहते है 'सामुदायिक विकास-योजनाएँ और विस्तार-योजनाएँ निम्नवर्ग की आर्थिक स्थिति सुधारने मे सफल नही हुई।' इसलिए यह अन्त्योदय का अर्थात् सवसे नीचे के लोगो के उदय का कार्यक्रम नही है। और फिर इस योजना की गति भी वहुत ही मद है। पाँच वर्षो मे देश का उत्पादन पचीस प्रतिशत वढने-

वाला है। उसमे से आधा तो वढती हुई जन-सख्या के कारण साफ ही हो जायगा। अर्थात् वारह प्रतिशत ही उत्पादन वढेगा। इसमे से गरीवो के पल्ले कितना पडेगा, कौन जाने ! इस वारे मे, जैसा कि श्रीमन्नारायणजी कहते है, इन नौ-दस वर्षो मे धनी और गरीव के जीवन-मान मे अन्तर कम न होते हुए उल्टा वढता ही जा रहा है। इसलिए गरीवो की गरीवी मिटे विना वे इन सुधारों का वहुत-कुछ लाभ न उठा सकेंगे। इन छोटे-मोटे सुधारो से एक दु ख मिटेगा, तो दूसरा पैदा हो जायगा। अत दु ख-निवारण का काम क्राति का काम नही है। अगर हम इस काम मे पडे, तो खुद मिट जायँगे, पर दु.ख न मिटेंगे। इसलिए हमे दु खो की जड़ ही काटनी चाहिए। वर्तमान दु खों की जड़ सदोप आर्थिक रचना है। इसीलिए हम खेती और धन वाँटेंगे और नवीन अर्थ-रचना खडी करेंगे। इतनेभर से ही गरीव किसानो का उत्पादन एकदम दुगुना हो जायगा। भूमि-मजदूरो का उत्पादन तो इससे भी अधिक वढेगा। खेती मिल जाने के कारण उनके काम का हौसला ही वढ जायगा और इसीलिए पाँच वर्षो मे देश का उत्पादन डेढ-दो गुना हो जायगा। ग्रामदानी गाँवो का उत्पादन एक वर्ष मे दो-तीन गुना हो गया, यह तो हम देख ही चुके हैं। उनका उत्पादन वढा कि फिर वे स्कूल, दवाखाने, तकावी आदि सुवारो से भी लाभ उठा सकेंगे। गाँव स्वय ही स्कूल और अस्पताल चला सकेंगे।

जो स्थिति पंचवर्षीय योजना की है, वही सेवा के अन्य कामों की भी है। ये सारे काम जी-तोड मेहनत से अनेक सेवक कर रहे

हैं। इससे गरीबो को थोडी-बहुत मदद और आधार भी मिल जाता है, फिर भी गरीबी हमेशा के लिए नही मिटती। पूंजीवादी रचना नही बदलती। तीस-पैंतीस वर्षो से खादी-काम चल रहा है। दस-पन्द्रह वर्षो से नयी तालीम का कार्य चल रहा है। पचास-साठ वर्षो से मजदूर-सघटन कायम हैं, फिर भी इन सबसे समाज-रचना मे रत्तीभर अन्तर नही आया। इसलिए पचवर्षीय योजना, विधायक कार्यो और मजदूर-सघटन मे जनता का मन नही लगता।

नेहरूजी कहते हैं कि 'पचवर्षीय योजना से अन्न का उत्पादन ठीक-ठीक वढाया नही जा सका और न किसानो मे उत्साह ही निर्माण किया जा सका।' वैसे ही विनोवाजी कहते हैं कि मैंने तीस वर्ष विधायक कार्यो मे बिताये, फिर भी वे विधायक कार्य वहुत ज्यादा आगे न वढ सके। क्योंकि उन्हे भूमि का—भू-वितरण का—आधार नही था। भला नीव के विना मकान कैसे खडा हो सकता है ? उडीसा के कुछ हिस्से मे किसान धान का वीज वोने के पहले खेती को जला डालते हैं, वाद मे नयी वोवाई करते हैं। इससे फसल अच्छी होती है। इसी प्रकार पुरानी समाज-रचना वदले विना नवीन काम कैसे होगा ? आज समाज अर्थ-सग्रह की नीव पर खडा है, उसे वदलकर हमे असग्रह और श्रम-निष्ठा के नवीन नैतिक मूल्यो पर उसे खडा करना है। व्यभिचार के खिलाफ कानून रहे या न रहे, व्यभिचार आज अवैध माना ही जाता है। वैसे ही सग्रह भी अवैध माना जाना चाहिए।

ग्रामदान पुरानी समाज-रचना को बदलकर नवीन समाज-रचना करने का काम है। ग्रामदान के रूप मे मानवीय मन बदलने की कुन्जी मिल गयी है। ग्रामदान से आज के सारे प्रश्न हल हो जायँगे। मानव-मन को लोभ, बेजवाबदारी और बेदरकारी के लगे ताले खुल जायँगे। यह क्रांति सत्ताईस सौ गाँवो मे एकदम कैसे हो गयी ? भूदान के बीज से ग्रामदान का वृक्ष कैसे निर्माण हुआ ? यह जानने के लिए हमे थोडा पीछे मुडकर देखना चाहिए।

• • •

पिछले छह वर्ष : ३ :

भारत मे समता और समृद्धि लाने और देश का सारा कल्मष धो डालने के लिए सन्त विनोवाजी ने सन् १९५१ मे भूदान-यज्ञ शुरू किया। भूदान-यज्ञ का कार्य करने के लिए सब प्रान्तो मे उन्होने भूदान-समितियाँ स्थापित की। इन पाँच वर्षो मे देश के हजारो कार्यकर्ताओ को यज्ञ का प्रशिक्षण मिला। लाखो गाँवो मे सन्देश पहुँचा। कोटि-कोटि जनता को भूदान-यज्ञ के मोटे-मोटे तत्त्व मालूम हो गये। बयालीस लाख एकड जमीन प्राप्त हुई। बाईस हजार से अधिक गाँव ग्रामदान मे मिले। सम्पत्ति-दान, बुद्धि-दान, श्रम-दान और जीवन-दान शुरू हुए। हजारो लोगो ने पूरा समय देकर काम किया। भूदान-आन्दोलन चलाने के लिए तथा जरूरतमन्द कार्यकर्ताओ के निर्वाहार्थ 'गाधी-स्मारक-निधि' से भी कुछ मदद मिली। शेष मदद जनता ने की। सैकडो कार्यकर्ताओ ने अवैतनिक कार्य किया। कन्याकुमारी से हिमालय तक और द्वारिका से डिब्रूगढ तक भूदान-यज्ञ की घोषणा से भारतीय आकाश गूँज उठा। किन्तु विनोबाजी का ध्येय हिमालय जितना उच्च और सागर जितना ही गभीर है। इसलिए उन्होने इस वर्ष कन्याकुमारी मे हिन्द महासागर के सामने प्रतिज्ञा की कि 'ग्रामराज्य मेरा लक्ष्य है और उसके सिद्ध होने तक मै इसी तरह यात्रा करता रहूँगा। ग्रामराज्य के इस ध्येय के लिए सत्तावन मे गाँव-गाँव का ग्रामदान होना चाहिए।'

लोग पूछते है कि इतनी ऊँची उड़ान एक वर्ष मे ही कैसे भरी जा सकेगी ? छह वर्ष मे दो-ढाई हजार ग्रामदान और सत्तावन मे, एक वर्ष मे साढे पाँच लाख ग्रामदान ! लोग पूछते है कि यह कौन-सा गणित है ?

यह क्राति का गणित है। मृग नक्षत्र मे हम विनौला वोते हैं। दशहरे के आसपास कपास के पौधे मे शुरु में एक यहाँ, तो एक वहाँ, इस तरह आठ-दस कपास की ढेढी (वोड) दिखाई पडती है। वाद मे पन्द्रह दिनो मे चारो ओर से वे सफेद हो जाती है। जो काम तीन-साढ़े तीन महीने मे किंचित् भी दिखाई नही दिया, वह तीन महीने वाद थोडा-सा दीखने लगा और फिर दस-पन्द्रह दिन वीतते-न-वीतते वही सर्वत्र प्रकट हो जाता है। इसी तरह अव तक भूमि-क्राति की तैयारी हुई है। सवको आत्म-विश्वास हो गया है। इसलिए सव लोग जोर लगाये, तो सत्तावन मे यह क्राति सफल होकर आर्थिक रचना को वदल सकती है, यह किसीकी भी वुद्धि को जँच सकने जैसी वात है।

वर्तमान आर्थिक रचना कैसी है ? उसका आधार स्पर्धा या खीचतान है। 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' का न्याय आज आर्थिक क्षेत्र पर लागू होता है। समाज मे धनी, मध्यम वर्ग और गरीव—ऐसे वर्ग वन जाते हैं। मालिक और मजदूर, ये गुट वन जाते हैं। आपस मे सघर्ष होता है। समझ लीजिये, राम के पास दस सेर शक्ति है और गोविन्द के पास आठ सेर ! दोनो मे सघर्ष होने पर राम जीतेगा, लेकिन सारा समाज हार जायगा। क्योंकि सघर्ष के कारण सोलह सेर शक्ति लड़ने मे खर्च हुई और

दो सेर समाज को मिली। इसके विपरीत राम और गोविन्द मे सहयोग हो जाय, तो समाज को अठारह सेर शक्ति मिलेगी। सघर्ष से द्वेष, मत्सर और कलह बढता है। वह अन्त मे विश्व-युद्ध तक पहुँचता है। सब जानते हैं कि इसमे किसीका भला नही है। फिर भी समाज-रचना के इस भँवर मे पड जाने से किसीको भी इससे बाहर निकलने का उपाय सूझ नही रहा है। इसलिए हमे खीचतान या स्पर्धा की जरूरत नही। हमे सहयोग के आधार पर ही समाज बनाना है।

अतएव आज के समाज की रचना बदलनी चाहिए। आज समाज मे रोग फैलता है, तो उससे डॉक्टर को लाभ होता है। झगडे बढने पर वकील की बन आती है। अतिवृष्टि से घास-फूस बढ जाय, तो मजदूरो को फायदा और मालिक को नुकसान। याने आज यह चलता है कि एक का फायदा होता है, तो दूसरे का नुकसान। किन्तु वास्तविकता यह है कि एक मनुष्य के हित के विरुद्ध दूसरे का हित हो ही नही सकता। आज की गलत समाज-रचना के कारण हितो में विरोध का भास निर्माण हो गया है। इसलिए हमे ऐसा समाज स्थापित करना चाहिए, जिसमे एक के स्वार्थ की दूसरे के स्वार्थ से टक्कर न हो और सबका उदय हो। ऐसे ही समाज को 'सर्वोदय-समाज' कहा जाता है। यह कौन नही जानता कि केवल जमीन के वितरणमात्र से सारे प्रश्न हल नही हो जाते। आर्थिक समता की नीव के बिना सर्वोदय-समाज की इमारत खडी न हो सकेगी। इसके लिए सबमे कर्तव्य-भावना जगानी होगी। अपने से अधिक दु खी लोगो के

लिए हरएक को कुछ करना चाहिए, यह भावना समाज मे निर्माण करनी होगी। हमारे देश मे सबसे नीचे का आदमी है, कृषि-मजदूर। किसान उसे जमीन दे और दूसरे लोग संपत्ति-दान द्वारा बैल, औजार, बीज आदि दे। यह कार्यक्रम भूदान-यज्ञ द्वारा देश के सामने आया। प्रत्यक्ष त्याग और आचरण का कार्यक्रम देश को भूदान-यज्ञ के कारण मिला। देश के लाखो लोग उस मार्ग पर एक-एक कदम बढे है। जो उस मार्ग पर न चल सके, उन्हे भी वह अच्छा लगा।

एक बार जन-मानस मे कार्यक्रम के प्रवेश होने पर अब सर्वोदय-समाज की स्थापना के लिए जल्दी-जल्दी आगे के कदम उठाना संभव होगा। हमारे देश मे देहात बहुत है। इसलिए हमारे देश की रचना ग्राम-प्रधान होनी चाहिए। स्वराज्य की पार्सल लन्दन से दिल्ली पहुँच गयी, पर अब वह वही अटक गयी। अब उसे गाँव-गाँव पहुँचाना चाहिए। स्वराज्य का रूपान्तर ग्रामराज्य मे होना चाहिए। ग्रामराज्य तभी स्थापित होगा, जब सबको तीव्रता से उसकी आवश्यकता महसूस होगी। इसलिए अगले प्रकरण मे हम ग्रामराज्य की आवश्यकता पर विचार करेंगे।

● ● ●

ग्रामराज्य की आवश्यकता : ४ :

अपने पैरो पर खडे हुए बिना देहात सुखी न बन सकेंगे। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है कि 'पराधीन आदमी को स्वप्न मे भी सुख नही मिलता' *'पराधीन सपनेहु सुख नाही।'* उसी सुख के लिए हमने भारत का स्वराज्य प्राप्त किया है।

जो न्याय भारत पर लागू होता है, वही भारत के ग्रामो पर भी लागू होता है। स्वराज्य-प्राप्ति को दस वर्ष हो गये, लेकिन अभी तक ग्रामो की गुलामी नही मिटी। हर बात के लिए देहात शहरो पर अवलबित हैं, गुलाम है। इसीलिए गाँवो को चारो तरफ से लूटा जा रहा है। इसी कारण गाँवो मे लक्ष्मी नही रही। ग्रामीण शहरो मे बना माल खरीदते है, इसलिए ग्रामोद्योग नही रहे। देहातो मे बेकारी और अर्ध-बेकारी प्रचड रूप मे है। एक साधारण देहात का हिसाब लगाकर देखा गया। उससे दिखाई दिया कि देहाती जितना कमाते है, उससे ज्यादा लूट-खसोट, अज्ञान और व्यसनो मे गँवा देते हैं। हिन्दुस्तान के हर कुटुम्ब की औसत वार्षिक आमदनी लगभग पन्द्रह सौ रुपये है। इसमे से ग्रामीण किसान के हिस्से मे सात सौ और मजदूर के हिस्से मे पाँच सौ रुपये आते है। केवल न्याय्य-वितरण मे भी प्रत्येक ग्रामीण की आमदनी दो-तीन गुनी हो सकती है।

हमारे देहातो मे किसान बहुसख्यक है। लेकिन वे भी क्या एक ही वर्ग के है? देहात के किसानो के चार वर्ग बन जाते है।

पहला है, बडे किसानो का वर्ग। इनके पास दो-चार सौ एकड से अधिक खेती होती है। खेती के लिए ट्रैक्टर रहता है, इसलिए इन्हे हम 'ट्रैक्टरवाले' कहेगे। गाँव मे इनका पक्का बँगला रहता है। शहर मे भी बँगला होता है। ये आजकल प्राय. शहर मे ही रहते हैं। घर मे टेवुल-कुर्सियाँ होती है। अपने लडके-बच्चो को शिक्षण के लिए दूर-दूर तक भेजते है। ये हाथ से काम नही करते। साहूकारी भी चलती है। सरकारी अधिकारी, असेम्बली के सदस्य, मंत्री आदि इन्हीके यहाँ ठहरते है। इस कारण गाँव के लोगो पर इनकी धाक होती है। पचवर्षीय योजना का काफी वडा हिस्सा इन्हीके पल्ले पडता है। इनकी सख्या दो फी सदी होगी।

दूसरा वर्ग उन लोगो का है, जो पचीस एकड से सौ एकड तक के मालिक है। घर पर साइकिल होती है, इसलिए इन्हे हम 'साइकिलवाले' कहेगे। पक्का घर है और घर मे कुर्सियाँ है। ये अपने वाल-वच्चो को शिक्षण के लिए नजदीक के कॉलेज मे भेजते है। देहात मे इनकी एकआध दूकान होती है, साहूकारी भी करते है। छोटे-मोटे यत्र लाकर ये गाँव मे वेकारी वढाते है। ये भी अपने हाथ से खेती मे काम नही करते। खा-पीकर सुखी होते है। इनकी सख्या सौ मे आठ-दस होती है।

तीसरा वर्ग पाँच एकड़ से पचीस एकडवालों का है। इनके पास वैलगाडी और वैल-जोड़ी होती है, इसलिए इन्हे हम 'वैलवाले' कहेगे। घर कच्चा और छोटा। चारपाई के सिवा कोई 'फर्नीचर' नही। ये अपने एकआध लड़के को सातवी तक

पढा सकते है । फिर वह शिक्षक या पटवारी बनने के लिए दर-दर की खाक छानता फिरता है। काम के समय ये मजदूरो से मदद लेते है। खाली समय दूसरो के यहाँ भी मजदूरी के लिए जाते है। हमेशा कर्ज मे आकठ डूबे रहते हैं। इनका जीवन आँसुओ की करुण कहानी होता है। इनकी सख्या पचास फी सदी होती है।

चौथा और सबसे नीचे का वर्ग उन लोगो का है, जिनके पास एक तो जमीन होती ही नही, और हो भी तो पाँच एकड से ज्यादा नही। इनके यहाँ एकआध बकरी होती है, इसलिए इन्हे 'बकरीवाले' कहना चाहिए। कभी-कभी इनके पास घर के लिए भी जमीन नहीं होती। घर यानी एक 'चद्रमौली' (बिना ढँकी, खुली) झोपडी! बर्तन-भाडे भी पूरे नही होते, फिर फर्नीचर कहाँ? न पेटभर भोजन और न बाल-बच्चो की पढाई! इसकी भी गारटी नही कि कल काम मिलेगा ही। इसलिए यह वर्ग सदैव चिंता और कर्ज मे डूबा रहता है। इनका जीवन हमारे देश का सबसे बडा कलक है। इनकी सख्या चालीस फी सदी होगी।

ऊपर के चार वर्ग ज्वारी और कपास के क्षेत्र को ध्यान मे रखकर किये गये है। धान के क्षेत्र मे पहला वर्ग तीस एकड के
का और दूसरा वर्ग दस से तीस एकड तक का है। तीसरा
पन्द्रह एकड तक का और चौथा वर्ग तीन से
। धान के क्षेत्र मे तीसरे वर्ग की सख्या
और चौथे वर्ग की पन्द्रह-बीस फी सदी

र के लिए माल पैदा करते हैं

और इसी कारण व्यापारियो की शरण जाते है। ऊपर का हर वर्ग अपने से नीचे के वर्ग को लूटने की कोशिश करता है। सबका भार भूमिहीन मजदूरो पर पडता है। सब किसानों की शिकायत है कि मजदूर मन लगाकर काम नही करते। मजदूरो की शिकायत है कि पहले जैसे मालिक नही रहे। छोटा किसान और भूमिहीन मजदूर राष्ट्र का आधार है, नीव है। लेकिन यह नीव, आधार ही कमजोर है।

आज गाँव की धन-दौलत पाँच मार्गो से शहरो की तरफ जा रही है। पानी लानेवाली मोट मे अगर बडे-बड़े पाँच छेद हो, तो उसका भरकर ऊपर आना असभव होता है। छिद्रो मे से होकर सारा पानी निकल जाता है। इसी तरह गाँव की लक्ष्मी आज शहरो की तरफ निकल जा रही है। ये पाँच छेद है—१ बाजार, २ साहूकार, ३. सरकार, ४. व्यसन और ५ रीति-रिवाज।

बाजार : हम अपनी चीजे बेचते और शहर का माल खरीद करते है। गाँव मे ही जरूरत की चीजे नही बनाते। खरीदी करते और बेचते, दोनो समय व्यापारी भाव तय करता है। इसलिए गाँववालो का माल सस्ते-से-सस्ते भाव पर लिया जाता है और शहर का माल महँगे-से-महँगे भाव पर उन्हे बेचा जाता है।

साहूकार : विवाह, सूखा, बैल आदि के लिए किसान साहूकार की शरण जाता है। उसका ब्याज कभी खतम नही होता और न मूल ही कभी चुकता होता है। ऐसी हालत मे रखी गयी खेती साहूकार के कब्जे मे जाने मे कितना समय लगता है?

सरकार : लोगो की अपेक्षा रहती है कि स्कूल, अस्पताल,

सडकें, कृषि-सुधार, उद्योग-विस्तार आदि सारे कार्य सरकार को करने चाहिए, इसलिए अनाप-शनाप कर बैठाये जाते है। फिर सरकार कृषि-कर और दूसरे कर पैसे मे वसूल करती है, अनाज के रूप मे नही लेती। इसलिए किसान बाजार का सहारा लेता और गिरे हुए भाव पर अपना माल वेच देता है। सरकार का इन करो मे से बहुत कुछ पैसा फौज, कर-उगाही, व्यवस्था और शहरो की सुख-सुविधा मे अटक जाता है। जो थोडा बहुत गाँव मे पहुँचता है, वह भी ऊपर के किसानो को मिलता है। फिर कुछ बच जाय, बैलवालो का नबर लगता है। ऐसी अवस्था मे बकरीवाले को क्या मिलेगा ? वह तो मानो जनमा ही नही है।

व्यसन : इस प्रकार चारो ओर से लूट होने के कारण हताश ग्रामीण जूआ, शराब, सट्टा आदि व्यसनो का शिकार बन जाता है। अन्य पुरुषार्थ शेप न रहने के कारण देहातो में मामूली-मामूली बातो पर झगडे-बखेडे होते रहते हैं, गुट पड जाते और पार्टियाँ बन जाती है। वर्तमान चुनाव की पद्धति से भी गुट बन जाते हैं। लडाई-झगडे अदालत में जाते हैं। वहाँ ग्रामीणो को वकील की शरण जाना पडता है। हर आदमी अलग-अलग शहरी लोगो के पास न्याय माँगने जाता है। इन सब कारणो से गाँवो का बहुत कुछ पैसा शहरो में जाता है।

रीति-रिवाज : ऐसे नीरस और उजाड जीवन में शादी-व्याह जैसे प्रसग आनदमय प्रतीत होते हैं। ऐसे अवसर पर ग्रामीण अनाप-शनाप खर्च करता है। विवाह, दहेज, सगाई, तेरही आदि

प्रसगों के लिए कर्ज लेना पडता है। इन रीति-रिवाजो के कारण बहुत सारा पैसा शहरो मे जाता रहता है।

इनके अतिरिक्त बीमार होने पर हम शहरी डॉक्टरो की ओर दौडते हैं। अपने धधे का उत्तम शिक्षण न देकर शहर का निठल्ला और आलसी बनानेवाला शिक्षण अपने लडके-बच्चो को देने मे हम धन्यता महसूस करते है। ऐसी पढाई और शहरी वातावरण से लड़का बिगड जाता है। फिर 'लड़का बिगड़ गया' कहकर देहाती चिल्लाते है। उसे नौकरी न मिलने पर कोसते है। नौकरी मिल जाय, तब भी देहात की बुद्धि शहर मे गयी ही। यह शिक्षित लडका खूब पैसा कमाता है यानी पुन देहातो को खुलेआम लूटता है। इस तरह शिक्षण, दवा-दारु आदि के निमित्त से अगणित पैसा शहरो मे जाता है। मनोरजन की सुविधा गाँव मे न होने से सिनेमा के निमित्त से भी काफी पैसा शहर मे जाता है। मजदूर के मन लगाकर काम न करने तथा छोटे किसानो को काम मे उत्साह न रहने से भी पैदावार बहुत कम होती है।

ऊपर लिखे गये पाँचो मार्ग एक-दूसरे की मदद करते है। जैसे लगान देने के लिए बाजार की शरण जाना पडता है। विवाह के लिए साहूकार की शरण जाना पडता है। सबका परिणाम एक ही है। फिर व्यापारी, साहूकार, वकील, सरकार आदि से ग्रामीण अकेला-अकेला ही व्यवहार करता है। गाँव की एकता कर व्यवहार नही करते। इसलिए उचित लाभ नही मिल पाता। इन सारे छिद्रो को बद करने का एक ही उपाय है और वह है, ग्राम-राज्य का निर्माण !

आज गाँव मे समाज ही नही है। फिर समाज-विकास कैसे हो—ऐसा केन्द्रीय मत्री श्री दे का कहना है। समाज का मतलब है, एक साथ चलनेवाला समुदाय। आज ट्रैक्टरवाले, साइकिल-वाले, बैलवाले और बकरीवाले आपस मे झगडते हैं। गाँवो के सज्जन लोग निष्क्रिय हो गये है। गाँव मे कोई किसी पर अन्याय-अत्याचार करे, पर सज्जनो की यह वृत्ति हो गयी है कि 'मुझे क्या करना है ?' इस कारण हर गाँव मे बदमाशो और गुण्डो की बन आती है। ऐसी स्थिति मे गुण्डो द्वारा त्रस्त गाँव मे सर्व-साधारण व्यक्ति रहना पसद नही करता। वह निकट के शहर की तरफ दौडता है। ऐसे पलायन से गाँव और भी विगड जाता है। इस प्रकार वर्ग-भेद और जाति-भेद से गिरे हुए, रात-दिन कल की चिंता से जर्जर और गुण्डो द्वारा ग्रसित गाँव का शोषण वाहर का कौन न करेगा ?

गाँव मे इतनी गदगी रहती है कि प्रवेश करते ही नाक वद करनी पडती है। वहाँ न दवा-दारू की सुविधा और न योग्य शिक्षक की। हर गाँव मे स्कूल नही होता। जहाँ स्कूल है, वहाँ जो पढाई होती है, उसे पढाई भी कहा जाय या नही, यह प्रश्न मन मे पैदा होता है। गाँव मे मनोरजन की सुविधा भी नही। गाँव के घरो की हालत यह है कि न उनमे हवा आती है, न प्रकाश और न पर्याप्त पोषक-आच्छादक अन्न-वस्त्र। गाँवो मे, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रो मे, पीने का पानी मिलना भी कठिन है। मील-मीलभर से वहनो को पानी लाना पडता है।

इन देहातो मे आज जीवन की कोई भी सुविधा नही है।

इसीलिए ग्रामीणो की नजर शहरो की तरफ लगी रहती है। कपडा, शक्कर, तेल, उद्योग, शिक्षण, न्याय, रक्षण, दवा, कर्ज, सारी बातो के लिए आज गाँववालो को शहरो का मुँह देखना पडता है। देहातो मे न सुख है और न समाधान! शहरो मे मास्टरी की, क्लर्क की या चपरासी की एकआध नौकरी प्राप्त की जाय, वहाँ छोटा-मोटा घर किराये से लेकर एकआध लडके-बच्चे की पढाई की जाय, सिनेमा देखा जाय, होटलों मे जाया जाय—यह है आज के देहाती का स्वप्न! अपने ग्रामीण जीवन मे आज उसे कोई दम नही दीखता। पग-पग पर उसका अपमान होता है। बुद्धिमान्, धनवान्, अधिकारी—सभी उसे तुच्छ समझते हैं। उसे भी फिर ऐसा ही प्रतीत होने लगता है। अपने गाँव का अभिमान रह ही नही गया है। शहर के सरकारी कर्मचारी, तहसीलदार और गाँव के पटवारी, वन-रक्षक आदि नौकर काम तुरत नही करते। पटवारी, अदालत और साहबों के घर चक्कर लगाने की कोई सीमा है! लेकिन अगर थोडी-सी मुट्ठी खोल दी जाय, तो काम हाथोहाथ हो जाता है—यह नित्य का अनुभव है। गाँव की खेती मे कुएँ के लिए या पीने के पानी के कुएँ के लिए सीमेट नही मिलती। लेकिन वह देखता है कि शहरो मे बँगलो के लिए या सिनेमा-घरो के लिए चाहे जितनी सीमेट मिल जाती है। इसलिए वह निराश होता और चिढता है। ऐसी परिस्थिति मे चुनाव के समय उसे भाषणो द्वारा बताया जाता है कि 'आप लोग राजा है, हम आपके सेवक है।' इसका असर उस पर जले पर नमक छिडकने जैसा होता है।

शहर के मनुष्य की तरह देहात के आदमी को भी वोट का अधिकार मिल गया है, पर इतने से ही वह 'राजा' नही बन गया। आज हमारे देश मे लोकशाही के नाम पर पूंजीपतियो और पढे-लिखो का राज्य है। इसलिए इस अपमान, शासन की दीर्घसूत्रता और लूट तथा दरिद्रता का एक ही उपाय है और वह यह कि ग्रामीणो का ग्रामाभिमान जाग्रत होना चाहिए। अपने-अपने गाँवो को 'ग्राम-दान' बना देना चाहिए।

तो, ग्रामराज्य हमारा ध्येय है। इसके लिए एक होकर हमे अपना राज्य स्थापित करना है—यह भावना ग्रामो मे निर्माण होनी चाहिए। 'ग्रामराज्य' का अर्थ यह है कि दूसरो पर या सरकार पर अवलवित न रहकर अपने पैरो पर खडा रहा जाय। गाँववाले जितनी अधिक सत्ता ऊपर-ऊपर के शासन को सौंपेगे, उतने ही वे पराधीन बनेंगे। अत ग्रामराज्य मे अधिक-से-अधिक सत्ता गाँव मे ही रहेगी। सव मिलकर एक होने के लिए गाँव मे से वे वर्ग खतम करने होगे, जो खीचतान या स्पर्धा पर आधृत है। वर्तमान भेद, वर्ग और स्वार्थों को कायम रखकर ग्रामराज्य की स्थापना कभी भी सभव नही। इसलिए गाँव को एकरूप बनाकर 'ग्राम-समाज' बनाना होगा। गाँव की सारी जमीन एक कर उसकी मालकियत गाँव की याने ग्राम-समाज की करनी होगी। इसीको 'ग्राम-दान' कहते हैं। ग्रामदान ग्राम-राज्य की नीव है। इस तरह हम ग्रामदान तक पहुँचते हैं। अतएव अब हम ग्रामदान पर विचार करेंगे।

• • •

ग्राम-दान

'ग्राम-दान' शब्द से लोग बेकार ही घबराते है। लोगो को लगता है कि ग्राम-दान यानी अपना सब कुछ किसी दूसरे को दे देना है। लेकिन ग्राम-दान का यह अर्थ नही है। इस ससार मे सब भगवान् का है। सूर्य, चन्द्र, बुद्धि, शक्ति, सब कुछ उसीका है। उसकी वस्तु उसे अर्पित करना ही ग्राम-दान है।

अपनी-अपनी जमीन, बुद्धि, सपत्ति—सब कुछ गॉव के लोग ग्राम-दान मे परमेश्वर को यानी गाँव को अर्पित करेगे और फिर आपस मे बॉटकर लेगे। इसमे डर की क्या बात है? यह तो हम अपने कुटुम्ब मे हर रोज करते है। ग्राम-दान यानी अपने कुटुम्ब को बडा बनाना, गाँव पर कुटुम्ब की रीति लागू करना। पूँजीवाद कहता है कि श्रम मजदूरो का और सपत्ति मालिको की है। 'जिसका श्रम, उसकी दौलत' यह समाजवाद का सिद्धान्त है। सर्वोदय 'श्रम समाज का और सपत्ति ईश्वर की' मानता है। ग्राम-दान के बाद सब लोग अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार काम करेगे। फिर उसमे से अपनी जरूरत के अनुसार लेगे।

या यों देखिये! गॉव मे हम लोग अखड कीर्तन अथवा 'गोपालकाला'* करते है। उस समय ज्वारी, गेहूँ, चावल आदि इकट्ठा करते है। फिर सब मिलकर गॉव की पगत करते है।

---

* श्रीकृष्ण की वन-भोजनलीला के अभिनय का एक प्रसिद्ध उत्सव, जो अमीर-गरीब सबकी एकता का प्रतीक है।

धनी ज्यादा देता है और गरीब कम। लेकिन सब भरपेट भोजन करते है। धनी ज्यादा देता है, इसलिए वह ज्यादा नही खाता और गरीब कम देता है, इसलिए उसे कम खाने को नही देते।

आगे हम देखेगे कि ग्राम-दान से उत्पादन तो बढेगा ही। लेकिन सिर्फ उत्पादन की वढती ही ग्राम-दान का रहस्य नही है। ग्राम-दान का रहस्य तो यह है कि हम सुख भी बाँट लेंगे और दुख भी। एक का सुख-दुख सबका सुख-दुख होगा। उससे सुख बढेगा और दुख घटेगा। आज गाँव मे थोडे-से लोग पेटभर भोजन करते है, वहुत-से आधा-पेट रहते हैं। लेकिन इसके वाद यह होगा कि खायेंगे तो सव और भूखे रहेगे तो सब। अर्थात् ग्राम-दान से कुटुम्ब गाँव जितना वडा बनेगा।

गाँव मे रहनेवाले करीव-करीव सभी लोग अपनी-अपनी जमीन, बुद्धि और श्रम दे देते हैं, तो ग्राम-दान हो गया। गाँव के वाहर रहनेवालो की गॉव की खेती उनसे वात करके प्राप्त की जा सकती है। यही वात गॉव मे रहनेवाले और जिसकी गाँव मे खेती है, उस किसान की भी है। गॉव मे रहनेवाले किसी एक ने अपवादस्वरूप दान नही दिया, तो उसके कारण ग्राम-दान की घोषणा और उसके आगे के काम को छोड देने या आगे ढकेलने की जरूरत नही। ग्राम-दान से अनेक प्रकार के लाभ हैं। इसी-लिए विचारको ने इस विचार का वहुत स्वागत किया है। प० जवाहरलाल नेहरू से लेकर कम्युनिस्टो तक, सवको यह विचार मान्य है।

अर्थशास्त्रियो को ग्राम-दान का विचार वहुत पसद आया।

क्योंकि ग्राम-दान अर्थशास्त्र का एक शुद्ध आधुनिकतम विचार है। ग्राम-दान के कारण जमीन के क्षेत्र की विषमता खतम हो जायगी। छोटे-छोटे टुकडे जुट जायँगे। सब पर जवाबदारी आने के कारण कल के जमीदार आज श्रम करने लगेगे और कल के मजदूर, जो 'कहा सो करनेवाले' थे, मन लगाकर बुद्धि-पूर्वक काम करेंगे। पुराने मालिको और मजदूरो मे अब तक चलनेवाला सघर्ष मिट जायगा। भूमि-सुधार के कार्य सहकार से चलेगे। एक हो जाने से गाँव की शक्ति बढेगी। फिर सरकारी सहायता भी ठीक समय पर और ठीक प्रमाण मे मिलेगी। क्योकि अन्य गाँवो मे सरकारी सहायता का लाभ केवल थोडे-से लोगो को मिलता है। लेकिन ग्राम-दानी गाँवो मे ऐसी स्थिति हो गयी है कि सरकारी सहायता का लाभ सबको मिलेगा। ऐसे गाँव को व्यापारी और साहूकार लूट नही सकते, क्योकि अब व्यक्ति अलग-अलग व्यवहार न करेगे। ग्राम-सघटन के द्वारा ही सारे व्यवहार चलेगे। घास के एक छोटे-से तिनके को कोई भी तोड-मोड सकता है, लेकिन जब उसकी रस्सी बन जाती है, तो उसमे हाथी को भी बाँध रखने की शक्ति आ जाती है। इसी तरह गाँवो मे ग्रामोद्योग शुरू होगे। गाँव के लोग आपस मे अपने यहाँ के बुनकर, चमार, तेली, कुम्हार, बढई, लुहार आदि द्वारा तैयार चीजें उपयोग मे लायेगे। इससे ग्रामोद्योग बढेंगे, गाँव की सपत्ति गाँव मे रहेगी और गाँव धनी बनेगा। गाँव की बेकारी मिटेगी और गाँव स्वावलबी होगा।

धार्मिक पुरुष तो ग्राम-दान के विचार से नाच उठते है।

क्योकि उससे आपस मे प्रेम और सहकार बढेगा। इससे समाज का नैतिक और सास्कृतिक स्तर ऊँचा उठेगा। इससे गाँववालो की आध्यात्मिक उन्नति होगी। वे कहते हैं कि अब तक 'मैं-मेरा' छोड दो, ऐसा धर्म-पुस्तकें और हम कहते आये, पर हमारा किसीने सुना नही। 'ग्राम-दान' से 'मेरी जमीन', 'मेरी सम्पत्ति' खतम हो गयी और 'हमारी जमीन', 'हमारी सपत्ति' की भावना प्रकट हुई। धर्म का काम हो गया। जब हम 'मेरा घर', 'मेरा खेत' कहते हैं, तब यह 'मेरा' ही मुझे आसक्ति के जाल मे फँसाता है। सारा गाँव हमारा घर बन गया, यानी मनुष्य व्यापक बन गया। उसकी छोटे-से घर सबधी आसक्ति छूट गयी।

पहले के ऋषि कहते थे कि 'घर छोड दीजिये, इससे आसक्ति छूटेगी।' उनका अनुकरण बहुत थोडो ने किया। किन्तु इससे उल्टे विनोबाजी कहते है कि तुम अपने कुटुम्बियो पर प्रेम करते हो, यह अच्छी बात है—इसे गाँव तक व्यापक बना दीजिये। एकदम तो कोई प्रेम कर नही सकता, इसलिए गाँव पर प्रेम करने का यह मध्यम मार्ग निकाला गया। अत जमीन देश की मालकियत की नही होगी, वह गाँव की मालकियत की होगी। विनोबाजी इस तरह वैराग्य न सिखाकर गृहस्थ-धर्म सिखा रहे है। गाँव एक कुटुम्ब बन जाने पर मेरी कृषि पाँच-पचास एकड न रहकर हजार-पाँच सौ एकड जमीन हमारी हो जायगी। सारे गाँव की खेती हमारी होगी।

इस तरह हमने देखा कि ग्राम-दान धर्म की कसौटी पर भी सही उतरता है। धर्म कहता है कि किसी एक को दुख हो,

तो उसमे सवको साझीदार वनना चाहिए। किसी एक को ही भूखे न रहने दिया जाय। स्वय कम खाकर दूसरे को खाने के लिए देना ही प्रेम है। इसे ही दया और करुणा कहते है। यही परमेश्वर का रूप है। ग्राम-दान के काम मे साक्षात् करुणा प्रकट होती है। जमीन गाँव की मालकियत की करके धनी लोग गरीवो के लिए त्याग करते है, जैसे कि घर मे वच्चों के होने पर माँ-वाप पहले उन्हीको खाने-पीने को देते और वच जाय, तो स्वय खाते है। कुछ न वचे, तो भी ऐसे उपवास मे उन्हे महान् आनन्द आता है। यह अवसर ग्राम-दान से ऊपर के वर्ग को मिलता है। मजदूर श्रम-दान करते है। वे मेहनत मे धनवान् है। समय आने पर वे अपना काम छोडकर मेहनत से गरीव धनी लोगो के खेतों पर काम करेंगे। इस तरह त्याग करने का महान् अवसर ग्राम-दान से सवको मिलेगा। इसलिए यह महान् धर्म-विचार है।

विज्ञान (साइन्स) ग्राम-दान के वारे मे क्या कहता है? विज्ञान के कारण सारा जगत् नजदीक आ गया है। विश्व के किसी कोने मे अगर लड़ाई हो रही हो, तो उसका असर सारे विश्व पर पडता है। इसलिए विज्ञान-युग मे हमे अपने मन वडे करने चाहिए, हृदय विशाल वनाने चाहिए। सवको मिल-जुलकर काम करना चाहिए, नही तो हम नष्ट हो जायँगे। आज कोई भी दूसरों की मदद के वगैर टिक नही सकता। जगत् के साथ एकदम इस तरह घुल-मिल जाना तो कठिन है। उसमे भी कमजोर गांव की तो लूट ही होगी। इसलिए हरएक को अपना गाँव एक कुटुम्व मानना चाहिए। यह कठिन नही है। ग्राम-दान

होने पर सबका स्वार्थ एक हो जाने से गाँव को एक कुटुम्ब मानना आसान होगा। ग्राम-दान इसी विचार की प्रेरणा देता है। इसलिए ग्राम-दान वैज्ञानिक भी है।

राजनीतिक दृष्टि से ग्राम-दान कैसा है? राजनीतिज्ञ तो ग्राम-दान पर बेहद खुश है। वे कहते है कि प्रत्येक गाँव एक यूनिट (इकाई) बन जाय, तो स्वराज्य मे बडी भारी शक्ति पैदा होगी। गाँव मे शान्ति बनाये रखने मे कठिनाई न होगी। गाँव के लिए योजनाएँ बनाना सरल होगा। गाँव-गाँव मे राज्य हो जाय, तो गाँव-गाँव मे अच्छे कार्यकर्ता तैयार होगे। आज हमने राजनीति को अनुचित महत्त्व दे रखा है। हम कहते रहते है कि सब कुछ केन्द्रित सत्ता ही करे, कानून से हो। इसीके कारण आज विश्वशान्ति आइक, बुल्गानिन जैसे दो-चार व्यक्तियो के हाथ की बात बन गयी है। सारे महत्त्व के काम गाँववाले मिल-जुलकर कानून की परवाह किये बिना करें, तो राजकीय नेताओ की सत्ता क्षीण हो जायगी। इससे युद्ध करना दो-चार व्यक्तियो के हाथ मे न रहेगा, विश्व की जनता के हाथ मे रहेगा। जनता शान्ति-प्रिय है। अतएव ग्राम-दान उत्तम सरक्षण-योजना है। ग्राम की जनता द्वारा एकमत से चुनाव करे, तो उसका प्रभाव ऊपर के चुनावो पर भी पडेगा। चुनाव मे के तिकडम और छल-प्रपचो पर रोक लगेगी। गाँव मे पार्टी, दल न रहने से ऊपर के दल भी क्षीण हो जायेंगे। इस तरह राज-नीतिक जीवन भी शुद्ध हो जायगा। विश्वशान्ति निकट आयेगी।

शिक्षा-शास्त्री भी ग्राम-दान पर मुग्ध हैं। क्योकि इससे

सब लडको को उत्तम कर्मप्रधान शिक्षण प्राप्त होगा। आज तो केवल ऊपर के वर्ग के लडके ही पढ पाते है। ऊपर के वर्ग के लोगो में श्रम नही है। इसलिए उनके लडको को कर्महीन शिक्षण मिलता है। निम्नवर्ग के लड़के शिक्षण प्राप्त नही कर सकते। इसलिए वे ज्ञानशून्य कर्म करते हैं। ग्राम-दान से सब लड़कों को कर्ममय शिक्षण मिलेगा।

समाज-शास्त्री भी ग्राम-दान के विचार को उत्तम बताते है। ग्राम-दान से जाति-भेद मिटने मे बड़ी मदद मिलेगी। कोरापुट जिले मे ग्राम-दान के कारण जातिभेद मिट रहा है। ग्राम-दान से सामाजिक सुधारो की गाडी तेज दौडने लगेगी।

शान्ति और व्यवस्थावादी कहते है कि ग्राम-दान से चारो ओर व्यवस्था फैल जायगी। आज गरीब को दिन मे काम नही मिलता, तो वह रात मे काम (चोरी) करता है। उसे जेल मे बन्द कर दिया जाता है। वहाँ उसे भोजन, काम, नीद आदि सब व्यवस्थित रूप से मिलता है। सजा उसे न होकर घर के बाल-बच्चो को ही हो गयी, क्योकि घर का कमानेवाला गया। यह कैसा न्याय है! क्या यही व्यवस्था है? इससे क्या शान्ति स्थापित होगी? फिर पुलिस और सेना बढेगी। इसमे से अनाप-शनाप कर्ज का भार पड़ेगा ही। इसलिए ग्राम-दान से शान्ति और व्यवस्था के सारे प्रश्न हल हो जाते हैं।

इस तरह गाम-दान का विचार सबको मान्य है। इसमे सबका हित किस तरह समाया है, यह हम आगे देखेंगे।

• • •

सबका हित   : ६ :

ग्राम-दान मे सभी का हित है। वर्तमान परिस्थिति मे गाँव मे बडे किसान, छोटे किसान, कारीगर, मजदूर—किसीको भी पूरा समाधान नही है। ग्राम-दान सबको एक करनेवाला धर्म-विचार है, जो सवके सामने आया है। इससे सबके हृदय एक वनेंगे। गाँवो मे प्रेम वढेगा। ग्राम-दान मे सबका भला कैसे है और इसमे प्रत्येक को क्या भाग लेना चाहिए, यह हम देखें।

वड़ा किसान : वडे किसान का ग्राम-दान मे क्या हित है ? हमारे देश मे सामाजिक और आर्थिक विषमता के कारण झगडे होते है। आर्थिक न्याय की दृष्टि से देखा जाय, तो सबको उचित हिस्सा देकर अपने हिस्से मे आनेवाली जमीन ही हरएक को रखनी चाहिए। इसी तरह अपने से गरीब की मदद करना हर-एक का धर्म है। इस धर्म का पालन करने से ही समाज टिक सकेगा।

अग्रेज सत्ता छोडकर चले गये। राजा-महाराजाओ ने राज्य-पद छोड दिया, पर वे भूखे नही रहे। अगर वडे किसान प्रेम से अपनी जमीन ग्राम-दान मे दे देते हैं, तो लोग उन्हे अपने माता-पिता की तरह समझेगे और सँभालेगे। उनके खिलाफ फैला हुआ द्वेष एकदम खतम हो जायगा।

आज के अनेक गाँव वडे किसानो के ही वसाये हुए है। वे उन्हीके नाम से पहचाने भी जाते हैं। गाँव के लोगो की

सार-सँभाल उन्होने माता-पिता की तरह की है। इस ऐतिहासिक परंपरा के लिए यह शोभादायक ही है।

इन वडे किसानो को चाहिए कि गाँव पर से सरकारी अधिकारियो, व्यापारियो और साहूकारो के आक्रमण हटायें। उन्हे अपनी शक्ति, वुद्धि, सगठन-कुशलता का लाभ गाँववालो के लिए करना चाहिए। इसी तरह स्कूल, न्यायदान, अस्पताल, सहकारी सस्था, सरकार से सवध, अनेक उद्योग-धंधो आदि द्वारा वे गाँव की हर तरह सेवा कर सकते है। ऐसा त्यागी, सेवामय जीवन जीनेवाले वड़े किसानो को लोग किसी प्रकार की कमी महसूस न होने देगे।

आज का वडा किसान कर्ज के वोझ से दव गया है। लडके-लडकियो के विवाह, पढाई आदि की चिन्ता उसे सता रही है। ग्राम-दान के लिए गाँववालो द्वारा जमीन दिये जाने पर कर्ज का वोझ सहज ही सारे गाँव पर पडेगा। गॉव मे विवाह सार्वजनिक उत्सव माना जायगा। गॉव को कुटुम्व मानने पर गाँव के अन्य लड़को जैसा ही शिक्षण खुद के वच्चो को मिलेगा।

आज वड़े किसान के पास सौ-दो सौ एकड़ जमीन होती है। इस खेती के उत्पादन मे से आधा तो मजदूरों की मजदूरी के रूप मे देना पडता है। मजदूर मन लगाकर काम नही करते, इसलिए पैदावार कम होती है। मजदूरो पर देखरेख रखने के लिए दिवानजी, (मुकद्दम) रखना पड़ता है। आमदनी का एक हिस्सा इसीमे चला जाता है। कल को कोई मजदूर मिलेगा या नही, यह एक नयी चिन्ता निर्माण हो गयी है। सालदारों को इस साल क्या देना पडेगा, यह भी एक प्रश्न ही है। सग्रह के

कारण चोरी की चिन्ता है। सीलिंग, वशानुगत कानून, मृत्यु-कर आदि का भय है ही। इन चिन्ताओ के करते सौ-पाँच सौ एकडवाले किसान के हाथ केवल चौथा हिस्सा पडता है। तीन हिस्से जमीन का भार वह बेकार ही अपने सिर पर धरे रहता है। अमीरी के कारण सबकी निन्दा का पात्र तो उसे बनना ही पडता है। यह भी नही कि आज अमीरी की पहले जैसी कीमत रह गयी हो। सभी गरीबो की आँखो मे वह चुभता है। किसी भी वस्तु का उपयोग खुल्लमखुल्ला नही कर सकता। क्योकि पडोस की भयकर गरीबी देख उसका मन ही उसे खाता रहता है। रात को सुख-सन्तोष की नींद नही। शरीर-श्रम से दूर हो जाने के कारण उसका स्वास्थ्य भी बिगड जाता है और इसी कारण निरतर डॉक्टर की बोतलें घर मे रहती है। चिन्ता और भय का यह जीवन जीकर आज धनी लोग क्या कमा रहे है?

ग्रामदान मे अगर धनी लोग शामिल हो जायँ, तो उनकी भारी चिन्ता और सारा भय दूर हो जायगा। अवश्य ही उन्हे जमीन आज की अपेक्षा कम मिलेगी, पर औरो जितनी कम नही। ग्राम-कुटुम्ब मे शामिल हो जाने पर गाँववाले उन्हे दूसरो की अपेक्षा ज्यादा जमीन आनन्द से देंगे। जमीन का वितरण गणित की समानता से न होकर वह कुटुम्ब की स्थिति के अनुपात से बाँटी जायगी। कुटुम्ब मे दस रोटियाँ और पाँच आदमी हो, तो प्रत्येक को दो-दो रोटी न मिलकर अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार मिलती है। लेकिन खाते सब मिलकर ही हं। कुटुम्ब का यही न्याय गाँव पर लागू होगा।

ऐसे अनेक उदाहरण प्रत्यक्ष मे भी देखने को मिले है। मँगरौठ के दीवान साहब को गाँववालो ने प्रेम से उनके हिस्से से ज्यादा जमीन दी और स्वय कम रखी। धनवान् अगर प्रेम के मार्ग पर एक कदम चले, तो गरीब दो कदम चलेंगे। जगह-जगह का यही अनुभव है। प्रेम से प्रेम ज्योतित होता और द्वेप से द्वेप और अधिक वढता है—इस कहावत के अनुसार श्रमिक भी धनवान् को मिली जमीन मे श्रम-दान करेगे। आखिर आदमी जमीन अधिक क्यों रखता है ? कल की चिन्ता न रहे, इसीलिए न ? मिट्टी तो कोई साथ ले नही जाता। आज अधिक जमीन से चिन्ता वढ गयी है। धनवान् की सभी चिन्ताएँ दूर होगी। भारी-भरकम आदमी की तरह धनवानो ने अधिक जमीन का वोझ ले लिया है। भारी-भरकम आदमी की चरवी घट जाय, तो उसका स्वास्थ्य सुधरेगा और आयु भी वढेगी। ऐसा ही धनवानो का होगा। जो चीज पैसे से कभी नही मिल सकती, वह धनवान् को पहले ही मिल जायगी। उसे सबका प्रेम प्राप्त होगा।

मध्यम किसान · मध्यम किसान पर देश का वहुत भरोसा है। वह गाँव की रीढ की हड्डी है। उसका जीवन सीधा-सरल, मेहनती और सात्त्विक है। देश की सस्कृति उसीने सँभाल रखी है। लेकिन आज उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। उसकी खेती अलग-अलग अनेक टुकडो मे विखरी होने से उसे जोतने की दिक्कत है। साहूकारो का पाश हमेशा चारो ओर विछा रहता है। व्यापारी उसे पनपने नही देते। सरकारी अधिकारियों का उसकी तरफ ध्यान नही। मजदूरो का सहयोग नही। महँगी, पढ़ाई, दवा-दारू और न्याय के कारण उसका जी पस्त हो गया है।

ग्रामदान मे उसे एकत्र व्यवस्थित खेती मिलेगी । माल की खरीद-फरोख्त की व्यवस्था गाँव की सहकारी दूकान के मार्फत होगी । गाँव और सरकार की शक्ति उसके पीछे खडी रहेगी । उसे इस बात का घोखा या भय न रहेगा कि जमीन साहूकार को चली जायगी या उसे व्यापारी लूट लेगा । उसे सुखी और नित्य विकासशील जीवन प्राप्त होगा ।

छोटा किसान और मजदूर : चार-पाँच एकडवाले किसानो और मजदूरो का जीवन समान रूप से दीन-हीन है । उन्हे हमेशा भुखमरी और अपमान सहना पडता है । ग्रामदान मे सारी जमीन का वितरण होने पर उन्हे कष्ट करने पर पेटभर खाने जितनी जमीन मिलेगी । आज उसकी मेहनत की, पसीने की कमाई दूसरा ही खा जाता है । ग्रामदानी गाँव मे उसे दूसरो जितना भरपूर मिलेगा । ग्रामदान मे उसे कुछ भी खोना न पडेगा । उल्टे उसकी गरीबी और गुलामी की बेडियाँ टूट जायँगी और वह इज्जत के साथ जी सकेगा । मजदूर कहेगा कि जैसे जमीन गाँव की है, वैसे ही मैं भी अपनी मेहनत गाँव को अर्पित करूँगा । गाँव मे जिसे मेहनत करने की आदत नही है, उसकी मदद के लिए दौड पड़ूंगा ।

विनोवाजी कहते हैं कि मै गरीवो से चार कारणो के लिए जमीन मांगता हूँ

(१) अपने से गरीव की मदद करना हरएक का धर्म है ।

(२) जमीन पर से सवकी आसक्ति कम करानी है । जमीन पर किसीकी मालकियत न रहनी चाहिए । जैसे पैसे-

वाला सैकड़ो एकड का मालिक है, वैसे ही गरीब भी दो-चार एकड का मालिक है। मजदूर भी श्रम पर अपनी मालकियत मानता है। इन छोटी मालकियतो पर ही वडी मालकियते आधृत है।

(३) गरीव के दान से धनवालो के हृदय पिघलेंगे और एक नैतिक शक्ति निर्माण होगी।

(४) गरीवो के दान से सत्याग्रहियो की सेना वनेगी और वे इस आन्दोलन के सिपाही वनेंगे।

परोपकारी लोगो के ध्यान मे गरीवो के दान देने की वात नही आती। सव जानते है कि श्रीकृष्ण ने सुदामा के तदुल लिये विना उसे कुछ दिया नही। सुदामा से उन्हे कुछ लेना थोड़े ही था। उन्हे तो देना ही था। किन्तु लिये विना कुछ न देने की निष्ठुरता कृष्ण को दिखानी पडी। असल मे वे सुदामा की शक्ति वढाना चाहते थे, उसे भिखारी जैसा दीन नही वनाना चाहते थे। जमीन और श्रम देने से गरीवो की शक्ति वढेगी। गरीव कितना त्याग करते है! उन्हीके श्रम पर सारा विश्व चल रहा है। लेकिन उन्हे अपनी शक्ति और त्याग का भान नही है। जव वे अपने पडोसी के लिए, गाँव के लिए श्रम-दान करेंगे, तभी उनका त्याग प्रकट होगा। उनके त्याग के सामने कंजूस धनी टिक न सकेंगे। जो धनी उदार है, वे तो पहले ही ग्रामदान मे शामिल हो चुके होगे।

साहूकार : समाज मे धन का लोभ वढने के कारण साहूकार भी लोभी वन गये है। ग्रामदानी गाँव मे सभी अपना

लोभ छोड चुके होगे, इसलिए साहूकार भी अपना स्वार्थ न साध पायेंगे। सहकारी दूकान द्वारा जो कर्ज गाँववालो को दिया जायगा, उस सबध मे उनकी सलाह और मार्गदर्शन गाँव को मिलेगा। गाँव भी उसकी सबकी तरह चिन्ता करेगा।

व्यापारी : भावो मे तेजी-मदी हो जाय, माल खराब निकल जाय, तो दूकानदार को खोटे वजन, माप आदि अनुचित बातो का पाप करना पडता है। ग्रामदानी गाँव मे गाँव की ओर से एक ही मिली-जुली दूकान रहेगी। इससे दूकानदार को नफा-नुकसान की चिन्ता ही न रहेगी। उत्तम मार्ग से गॉव की सेवा करके निश्चित रूप से वह शीलवान् जीवन जी सकेगा।

शिक्षक, पटवारी, कलाकार आदि : बुद्धि का श्रम करनेवालो का समाज मे क्या स्थान रहेगा?

प्रत्येक को शरीर-स्वास्थ्य और बुद्धि-विकास के लिए शरीर-श्रम करना आवश्यक है। इसलिए ये सब लोग कुछ घण्टे शरीर-श्रम करेगे। अपनी कला और ज्ञान का दान देकर गॉव को ज्ञानी और सुन्दर बनाकर रहेगे। गांव उनकी चिन्ता करता रहेगा।

कारीगर : ग्रामदानी गाँव मे कारीगरो और उद्योग-धधे करनेवाले लोगो के बारे मे क्या कार्यक्रम रहेगा?

गाँव मे कुम्हार, चमार, लुहार, बढ़ई, नाई, दर्जी आदि अनेक लोगो के धधे टूटते जा रहे हैं। उनके शिक्षण की, उनके धधो के लिए पूंजी की और उत्पादित माल बेचने की कोई सुविधा नही है। उनकी स्थिति दिनोदिन बिगड रही है।

ग्रामदानी गाँवो मे होनहार बच्चों को उद्योग-शिक्षण देने , लिए शिक्षण-सस्था मे भेजने की व्यवस्था गाँववाले करेगे । ंधे के लिए लगनेवाली पूँजी गाँववाले और सरकार देगी । ,सी तरह उनके धधे मे लगनेवाले कच्चे माल की खरीदी और ाक्के माल की विक्री की व्यवस्था दूकान के मार्फत की जायगी । इस तरह धधे वढेगे और वेकारी दूर होगी । गाँव की लक्ष्मी गाँव मे रहेगी और गाँव के कारीगर तथा धधेवाले सुखी होगे ।

स्त्रियाँ : अपने सब बच्चे सुखी हो, यही सब माताओ की इच्छा रहती है । यही बात क्या धरती-माता को अपने पुत्रो के बारे मे न लगती होगी ? मातृ-शक्ति स्त्रियो की बहुत बडी शक्ति है । इसलिए अपने घर की सारी जमीन ग्रामदान मे अर्पण करके इस धार्मिक कार्य मे उन्हे मदद करनी चाहिए ।

आज के समाज मे रसोई और बच्चो से आगे स्त्रियो को कोई स्थान नही है । ग्रामदानी गाँव मे स्त्रियो को पुरुषो की ही तरह उनके जीवन के लिए आवश्यक शिक्षण दिया जायगा । खेती और घरेलू कार्यो के सिवा अनेक हस्तोद्योग और कला के काम वे सीखेगी । गाँव का कारोबार चलाने का मौका उन्हे पुरुषो की तरह ही मिलेगा । घर के जेलखाने से उनकी मुक्ति होगी और उन्हे समाज मे सम्मान का स्थान प्राप्त होगा ।

इस प्रकार ग्रामदान मे सभीका हित है । इसलिए लोग ग्राम-दान कर रहे है । ऐसे ग्राम-दानी गाँवो मे 'ग्राम-राज्य' कैसे निर्माण होगा, यह हम देखेगे ।

• • •

राज्य-कारोबार : ग्राम-राज्य का सघटन नीचे लिखे अनुसार रहेगा ।

प्रत्येक गाँव मे एक ग्रामसभा रहेगी । उस ग्रामसभा मे प्रत्येक कुटुम्व मे से एक प्रौढ पुरुष या स्त्री रहेगी । ग्रामसभा सर्वसम्मति से पाँच से लेकर नौ व्यक्तियो तक की एक सर्वोदय-पचायत बनायेगी । कृषि, ग्रामोद्योग, शिक्षण, आरोग्य, योजना, न्याय, अन्य देहातो तथा सरकारी सदस्यो से सवध आदि सारे काम ग्रामसभा के जिम्मे रहेगे । वही सर्वसाधारण नीति तय करेगी । पचायत इस नीति को कार्यान्वित करेगी । वह प्रतिदिन का कामकाज भी करेगी । पचायत गाँववालो पर सत्ता चलाने के लिए न रहेगी । परिवार मे जैसे माता-पिता अपने वाल-वच्चो की चिन्ता करते हैं, वैसे ही पचायत सवके कल्याण की चिन्ता करेगी ।

ऐसी अनेक सर्वोदय-पचायतें अपने मे से किसी होशियार व्यक्ति को तहसील-पचायत मे भेजेंगी, जो सौ गाँवो की वनेगी । ऐसी अनेक तहसील-पचायतें अपने मे से जिला-पचायत वनायेंगी । इसी पद्धति से प्रात, देश और विश्व के लिए सरकार वनेगी । जैसे-जैसे हम ऊपर जायँगे, वैसे-ही-वैसे सत्ता क्षीण होती जायगी । अन्त मे विश्व-पचायत के पास केवल नैतिक सत्ता रहेगी । ग्रामसभा जितनी और जिस विपय की सत्ता ऊपर की पचायत को

देगी, उतनी ही उसकी सत्ता रहेगी। इन सब पंचायतो मे कम-से-कम चौथाई सदस्य बहनें रहेगी।

ग्रामसभा और सारी पचायतो के काम एकमत से चलेगे। कुछ छिटपुट मतभेद रहेगे, तो लोग अपने मतभेदो को रखते हुए भी बर्ताव के समय तटस्थ रहेगे। इसे हम 'सहमति' कहेगे। किसी महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर मतभेद होने पर उस समय वह विषय छोड़ दिया जायगा। सब लोग एकमत होने की राह देखेगे। किसी भी परिस्थिति में बहुमत या अल्पमत न रहेगा। हमे 'तीन बोले परमेश्वर' या 'चार बोले परमेश्वर' का याय लागू नही करना है, 'पाँच बोले परमेश्वर' यह प्राचीन न्याय ही कायम रखना है।

गाँव का आर्थिक व्यवहार ठीक-ठीक चलाने के लिए और इस सबध मे गाँववालों का मार्गदर्शन करने के लिए हर गाँव मे एक सहकारी समिति रहेगी। यह समिति गाँव मे माल की खरीद-बिक्री के लिए 'स्टोर' (भण्डार) चलायेगी। गाँववाले अपना माल समिति के मार्फत खरीदेगे-बेचेगे। वे साहूकार से कर्ज न लेगे। सहकारी समिति गाँव की चारो ओर से होनेवाली आर्थिक लूट रोकेगी और सबको काम देने की योजना बनाने मे मदद करेगी। गाँव से बाहर जानेवाले और गाँव में आनेवाले माल पर सोसाइटी (समिति) का नियंत्रण रहेगा। इस तरह दरिद्रता दूर कर गाँव मे समृद्धि लाने के काम मे सहकारी समिति अगुवापन लेगी।

ग्राम-पचायत, सोसाइटी और गाँववालो के अन्य कार्य ठीक ढग से चलाने के लिए मदद करनेवाला एक सेवक-समुदाय

रहेगा। यह सेवक-वर्ग सत्ता मे न फँसेगा। यह सबसे अधिक काम और त्याग करनेवाला वर्ग रहेगा। सबका भला चाहनेवाला यह सेवक-वर्ग ग्रामराज्य को साकार बनाने का काम करेगा। यह सेवक-समुदाय ग्रामराज्य की रीढ की हड्डी होगी। इन सेवको की सख्या जितनी अधिक और स्तर जितना ऊँचा रहेगा, उतनी ही गॉव की प्रगति होगी।

ग्रामराज्य मे काम कैसे होगे और कौन करेगे, यह हमने देखा। अब यह देखें कि ग्रामराज्य मे कौन-से काम होगे

कृपि • कृपि गॉव का प्रमुख धधा है। कृपि की व्यवस्था कैसे की जाय, यह गाँववाले मिलकर तय करेगे। इस वारे मे तीन पद्धतियाँ हो सकती हैं

१ सारी कृषि सामुदायिक वनाना।

२ गॉव के लिए कुछ कृपि सामुदायिक रखना, कुछ लोगो की सहकारी कृपि रहे और शेष अलग-अलग जोती जाय।

३ गॉव के लिए कुछ कृषि सामुदायिक रखी जाय और वाकी की मव अलग-अलग जोती जाय।

(१) पहले हम सामुदायिक कृपि का विचार करे। गाँववाले विचार करेगे कि हमने गॉव को मालकियत समर्पित कर दी। अब खेती की मशक्कत भी मिलकर ही करेगे। ऐसी सामुदायिक कृपि की व्यवस्था सारे गाँववाले देखेगे। प्रतिदिन का काम चलाने के लिए ग्राम-सभा एक कृपि-समिति चुनेगी। होनेवाली पैदावार से लगान, स्कूल, अस्पताल आदि सामुदायिक काम किये जायँगे। आगामी वर्प के लिए पूंजी भी वचा रखी

जायगी। सकट-काल के लिए उत्पादन का कुछ अश अनाज के भडार मे जायगा। बचा हुआ उत्पादन सारे किसान आपस मे बाँट लेगे। जिसने जितना काम किया हो, उस अनुपात मे भी लोग पैदावार को बाँट सकेगे। इससे भी श्रेष्ठ तो यह होगा कि घरो में जितने लोग हों, उसी हिसाब से बँटवारा हो। अथवा दोनो के बीच का मार्ग भी निकल सकता है। सामुदायिक खेती मे सभी लोग श्रम-दान करेगे। इससे प्राप्त उत्पादन से लगान, स्कूल, अस्पताल, देवालय आदि सार्वजनिक सस्थाओ का खर्च चलेगा। आज वाई मे सामुदायिक खेती हो रही है।

न केवल सामुदायिक खेती ही, बल्कि सामुदायिक जीवन का भी एक अच्छा दृश्य फिलस्तीन मे 'किवट्स' नामक ढाई सौ गाँवो ने (लोकवस्तियो ने) निर्माण किया है। वहाँ सामुदायिक भोजनालय है। फसल वे सदस्यो मे बाँटते नही, 'किवट्स' ही सबकी आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। फिलस्तीन के लोगो को 'किवट्स' पृथ्वी के स्वर्ग जैसा लगता है।

(२) अथवा जितने गाँववाले तैयार होगे, वे सामुदायिक खेती करेगे। थोड़ी-सी खेती पूरे गाँव के लिए सामुदायिक खेती के रूप मे अलग रखी जायगी। बाकी की खेती बचे हुए लोग अलग-अलग करेगे। आज 'मँगरौठ' मे यही प्रयोग चल रहा है।

(३) अथवा गाँववाले ऐसा भी तय कर सकते है कि सारी खेती अलग-अलग करने के लिए बाँट ली जाय। केवल थोड़ी-सी (दसवे हिस्से तक) खेती सामुदायिक रखी जाय। यह तीसरी पद्धति है।

सुधारो से हगामे की अनिश्चितता कम हो जायगी। गाँव मे तो कोई मालिक और न कोई मजदूर। सभी गाँव के से बन जायँगे।

ग्रामोद्योग : लेकिन सिर्फ कृषि-सुधार से ग्रामराज्य स्थापित हो जायगा। जिस तरह हम भारत में सभी चीजें तैयार करने यत्न करते हैं, उसी तरह प्रत्येक गाँव की प्राथमिक आवश्यकत पूरी होनी ही चाहिए। अन्न-वस्त्र, घर, शिक्षा और स्वास्थ्य, चीजो को हम गाँव में ही पूरी कर लेगे। जहाँ तक हो स गाँव में तैयार होनेवाले कच्चे माल का पक्का माल गाँव मे बनाया जायगा। गाँव मे तेल-घानी होगी। अन्य उद्योग- भी चलेंगे। इनसे गाँव के हर आदमी को काम मिलेगा और ग से बाहर जानेवाली सम्पत्ति का प्रचण्ड प्रवाह रुक जायगा। सेर रूई की कीमत एक रुपया, तो उससे बननेवाले कपडे कीमत पाँच रुपये। हम पैदावार करते है एकगुना और गँव है चौगुना। उद्योग के कारण गाँव मे कला-कौशल वापस लौटेगा गाँव की आर्थिक इमारत खेती के एक ही स्तभ पर खडी होकर अनेक आधारो पर खडी की जायगी, जिससे वह अत्यधि स्थिर होगी। आज बडे उद्योगो से सिर्फ पचीस लाख लोगो काम मिल रहा है। सौ वर्ष मे इतनी प्रगति हुई। सिवा य द्योग के लिए पूँजी भी नही। इसलिए एकमात्र स्वावलबन अ ग्रामोद्योग ही गाँवो के लिए तारक मत्र है। गाँव के प्रत्येक कुटु के पास जमीन रहेगी और वह घर में ही कृषि के सहायक के रूप मे उद्योग भी करेगा। अनेक धधे करने से कुटुम्ब सास्कृतिक उन्नति भी होगी।

शिक्षक : गाँव-गाँव पाठशाला रहेगी। यह पाठशाला जीवनोपयोगी सारा शिक्षण देगी। कर्तृत्वशून्य विद्यापीठ की अपेक्षा यह शाला वास्तविक विद्यापीठ बनेगी। शिक्षा बुनियादी तालीम की नयी पद्धति से दी जायगी। फलस्वरूप ग्रामराज्य का अभिमान रखनेवाले उत्तम नागरिक गाँवो से निर्माण होगे। प्रारम्भिक रूप मे हर गाँव मे सुबह एक घण्टा पाठशाला चलेगी। धीरे-धीरे उसका रूपान्तर पूरे समय की पाठशाला मे हो जायगा। प्रौढो के लिए एक घण्टे की रात्रि-पाठशाला की कक्षा चलेगी।

स्वास्थ्य : स्वास्थ्य के लिए गाँव से बाहर के डॉक्टरो पर निर्भर न रहा जायगा। इसके लिए खासकर लगायी हुई वनस्पतियो से औषध बनेगे। स्वास्थ्य के नियमो से सबको परिचित करा दिया जायगा, जिससे रोग काबू मे आयेंगे। फलस्वरूप शिक्षा और स्वास्थ्य के कारण शहर की ओर जानेवाला बहुत-सा धन बच जायगा।

न्याय : आर्थिक रचना प्रतियोगिता की अपेक्षा एक-दूसरे की मदद पर खडी करने और गरीबी मिट जाने के कारण झगडे-टटे भी कम होगे। न्यायदान का लक्ष्य अपराध की जड खोजकर उसे मिटाना होगा। अपराधी को मानसिक रोगी समझकर उसका योग्य उपचार किया जायगा। जैसे, गरीबी के कारण चोरी करनेवाले को कृषि देने की बात हम पीछे पढ ही चुके हैं। जिस गाँव में झगड़े-टटे नही होते, वह रामराज्य है। हमारा लक्ष्य उस रामराज्य की ओर जाना ही रहेगा।

लूट कैसे रुकेगी ? ये सारी सुविधाएँ गाँव मे ही हो जाने

से गाँव की बुद्धि, श्रम और धन शहर मे बहुत ही कम जायगा। ग्रामदानी गाँव मे व्यक्तिगत साहूकारी या व्यापार को मौका न मिलने के कारण सूद और नफा खतम हो गये। जमीन की मालकियत मिट जाने से ठीका भी बद हो गया। सरकार के बहुत से काम ग्रामसभा के हो जायँगे और वह भी अधिकतर काम श्रम-दान से ही करा लेगी, जिससे सरकार के भारी-भरकम कर कम हो जायँगे। फिर कई सार्वजनिक कामो का खर्च सामुदायिक खेती की पैदावार से चलेगा, जिससे ग्रामसभा के भी कर न बढेगे। इस तरह व्यापारी, सरकार, साहूकार, व्यसन, अज्ञान और रीति-रिवाज (शिक्षा और स्वास्थ्य इनमे आ ही गया)—इन छिद्रो से खाली होनेवाली मोट अब भरी रहेगी। इस तरह शोषण के सभी दरवाजे बद हो गये। उल्टे कृषि-सुधार और ग्रामोद्योग से मोट मे ज्यादा पानी डालने के कारण वह लबालब भर निकलेगी।

सामाजिक सुधार : अब हम सामाजिक सुधार की ओर मुडे। ग्राम-दान से गाँव के जातिभेद क्षीण होगे। स्त्रियो को पुरुषो के बराबर और सम्मान का पद प्राप्त होगा। गाँववाले व्यसन छोड देगे। शराब, जूआ, सट्टा आदि बद हो जायँगे। अनेक जगह कानून द्वारा मद्यनिषेध होने पर भी शराब धडल्ले से बनायी और बेची जाती है। किन्तु ग्रामराज्य मे सारी सत्ता गाँववालो के हाथ मे रहेगी। कौन आदमी कैसा है, यह गाँववालो को मालूम रहने से इस तरह की बाते बद करना सरल हो जायगा।

गाँव के लडके-लडकियो की शादियाँ सामुदायिक पद्धति से

होगी। सभी ग्रामीण अपने गाँव के लडके-लड़कियो की शादियो मे आनन्द से भाग लेगे। ऐसी शादियाँ कम खर्च मे होगी और उसे सभी लोग बाँट लेगे। इससे लडके-लडकियो के माता-पिताओ पर अधिक भार न पडेगा। गाँव मे सात्त्विक मनोरजन की सुविधा रहेगी। गाँव का स्वयसेवक-दल या शान्ति-सेना ग्राम-राज्य की रक्षा करेगी।

पचवर्षीय योजना : ये और ऐसे ही अनेक काम करके ग्राम-राज्य को सुखी वनाने के लिए गाँव के सभी लोग मिलकर अपनी पचवर्षीय योजना वनायेंगे। हर गाँव की अलग-अलग योजना वनेगी। यह योजना पूरी करने की जिम्मेवारी पहले ही गाँववालों पर आयेगी। आज तो योजनाएँ दिल्ली मे वनती है। इसलिए गाँववालो मे उन्हे सफल वनाने का उत्साह नही दीखता। आज सभी की प्रवृत्ति काम टालने और जिम्मेवारी अपने ऊपर न लेने की है। सरकारी नौकरो और समाज-सेवको को इसका अनेक वार अनुभव आता है। गाँववाले मानते है कि सव कुछ सरकार या सेवक ही करे, हमारी जिम्मेवारी सिर्फ उपभोग करने की है। आज के स्वराज्य मे न तो मजदूरों की जिम्मेदारी है और न ठिकाने से मालिको की ही। हर आदमी दूसरे के सिर दोप मढने को तैयार है।

अव ग्रामराज्य हो जाने से अपने सुख-दु ख के जिम्मेवार ग्रामीण ही होगे। इससे गाँव की लाचारी और निरुत्साह की भावना मिट जायगी। अनेक पीढियो के वाद पहले-पहल गाँव-वालो मे यह आत्म-विश्वास जाग उठेगा कि गाँव अपने पैरो पर

खडा हो सकता है। गाँववालो की शक्ति, बुद्धि और युक्ति को पूरा मौका मिलेगा। शोषण पर आधृत रचनाएँ खतम हो जाने से भी ग्रामराज्य सभी ओर से तेजी से प्रगति करेगे। अनेक गाँवो की पैदावार दो-तीन वर्षो मे ही दुगुनी हो जायगी। सामाजिक और नैतिक क्षेत्रो मे भी अनेक चमत्कार दीख पडेगे।

सर्वोदयी समाज का चित्र : लोग विनोबाजी से पूछते है कि ग्रामराज्य स्थापित कर आप जो सर्वोदय-समाज बनाना चाहते हैं, क्या उसमे लक्ष्मी बढेगी या कम होगी ? लोगो को लगता है कि विनोबा पैदल चलता है, कम कपडे इस्तेमाल करता और परिग्रह त्याग बैठा है। इसलिए सारे समाज को वह अपने-जैसा ही साधु-सन्यासी बनाना चाहता है। विनोबा कहते हैं "मैं लोगो को समझाना चाहता हूँ कि हमे असग्रह के सिद्धान्त पर समाज खडा करना है। पर लोग 'असग्रह' का अर्थ समझे नही हैं।

आज हिन्दुस्तान मे सर्वोदय-समाज नही है। लोगो पर सग्रह बढाने का भूत सवार है। पर इतनी सग्रह-निष्ठा होकर भी ये कितना सग्रह कर पाये ? आज के सग्रही समाज मे कुटुम्ब के हर आदमी के पीछे औसतन ढाई छटाक दूध पडता है। लेकिन विनोवा के असग्रही समाज मे प्रतिव्यक्ति एक सेर दूध रहेगा। आज के सग्रही समाज मे यह सन्देह ही है कि वर्षभर का अनाज सग्रहीत है या नही। पर मेरे असग्रही समाज मे पूरे दो साल का अन्न-सग्रह रहेगा। हरएक के घर मे खूब अन्न रहेगा। वह इतना रहेगा कि उसकी कीमत ही न रह जायगी। आखिर अन्न की कीमत ही क्या ? कोई भूखा होगा, तो लोग

उसे खिला देगे। पर कोई भी अन्न न वेचेगा। 'डालडा' खाने-वाले को शुद्ध घी मिलेगा। कारण सर्वोदय-समाज मे घी प्रचुर रहेगा। शाक भी भरपूर रहेगी। किसी भी घर मे जाइये, आपको भोजन मिलेगा। ऐसे असंग्रही समाज मे दूध ही क्या, शहद की भी महानदी वहेगी।

इसलिए पहली वात, असग्रही समाज मे विनोवा इतना वडा सग्रह करना चाहते हैं। लोगो को इसकी कल्पना ही नही। फिर भी वे यह सग्रह थोडे-से ही घरो मे वढाना नही चाहते। उसे प्रत्येक घर मे वाँट देना चाहते हैं।

दूसरी वात, संग्रह का समान वितरण होगा। सग्रह खूव रहेगा, पर वह घर मे नही, समाज मे रहेगा।

तीसरी वात, यह सग्रह निरुपयोगी वस्तुओ का न रहेगा। सिगरेट-वीडी का ढेर ग्रामराज्य के सग्रह मे न रहेगा।

चौथी वात, अच्छी चीजो के सग्रह मे भी क्रम देखना पडेगा। आज का क्रम कुछ भी अर्थ नही रखता।

नवर एक, उत्तम भोजन मिलना चाहिए।

नवर दो, पर्याप्त कपडा चाहिए।

नवर तीन, रहने के लिए अच्छे घर चाहिए।

नवर चार, साधन और औजार मिलने चाहिए।

नवर पाँच, ज्ञान के साधन, उत्तम पुस्तके सुलभ होनी चाहिए।

नवर छह, मनोरजन के स्वस्थ साधन सगीत आदि लोगो को सुलभ होने चाहिए। इसी क्रम के अनुसार वस्तुएँ वढानी चाहिए।

आज शहरो की स्थिति यह है कि खाने को नही मिलता, पर लोग कपडे अच्छे पहनते हैं। साराश, यह देखना होगा कि कौन-सी चीज पहले और कौन बाद मे अपेक्षित है। 'असग्रह' का अर्थ है, क्रमयुक्त संग्रह।

पाँचवी वात, असग्रही समाज मे पैसा कम-से-कम रहेगा। पिस्तौल तानकर केला ले जाना चोरी या लूट ही है। नोट देकर घी ले जाना भी ऐसी ही चोरी या लूट है। पैसा राक्षस के हाथ का शस्त्र है। पैसे से चोरी सुलभ हो जाती है। वह रात मे करने की जरूरत नही पडती। दिन दहाडे करते बनती है। आज पैसे के कारण यह भ्रम फैल गया है कि पास मे दूध, दही, शाक-भाजी और अनाज होने पर भी वह गरीब है और इनमे से कुछ भी न होते हुए भी सिर्फ पैसा होने से वह श्रीमान् है। इसलिए पैसा कम ही रहेगा।

इस तरह पाँच लक्षणो से युक्त असग्रही समाज ग्रामराज्य में रहेगा।"

यह है, सर्वसाधारण ग्रामराज्य का चित्र। फिर भी आखिर यह तय करने का जन्मसिद्ध अधिकार गाँववालो को ही है कि गाँव कैसा रहे। इसलिए उन्हे हाँकने के लिए गडेरिये की जरूरत नही। जो गाँवो मे रहेगे, वे ही अपने गाँव को योग्य आकार देगे। वाहरी लोग उन्हे सलाहभर देंगे। लेकिन गाँव कैसा हो, यह तय करने और उस तरह कर दिखाने की सारी जिम्मेदारी गाँववालो की ही रहेगी। स्वराज्य-प्राप्ति के वाद हम और भी परावलम्वी हो गये हैं। लोग समझते हैं कि अव

सब बातें सरकार ही करेगी। इससे बढकर भयानक और गलत विचार दूसरा नही हो सकता। स्वराज्य का अर्थ दूसरो की गुलामी मिटना मात्र नही। उसका अर्थ यही है कि हरएक को अपना राज्य है, यह मालूम पड़े। स्वराज्य तो हम बनानेवाले है। जिस तरह अपना खाना हमे ही खाना पड़ता है और तभी भूख मिटती है, उसी तरह अपना ग्रामराज्य भी हमे ही निर्माण करना होगा। तभी हमारा दु ख मिटेगा। भगवान् ने गीता मे स्पष्ट कहा है. 'उद्धरेदात्मनात्मानम्' अपना उद्धार करना खुद के हाथ मे ही है।

• • •

फिर भी कुछ प्रश्न खड़े हो जाते है। कुछ शकाएँ मन मे उठती हैं। उन पर भी हम लोग विचार करे।

१. प्रश्न गाँव के अधिकतर किसानो पर कर्ज है। यह कर्ज साहूकार ने खेती गिरो रखवाकर या उसीके भरोसे दिया है। वह कैसे ?

उत्तर खेती सारे गाँव की बन जाने पर कर्ज भी सारे गाँव का हो गया। अब कर्जदार खुद साहूकार से कुछ न कहेगा। ग्रामसभा के प्रमुख लोग ही सभी साहूकारो से मिलेंगे। उनसे समझ लेंगे कि कर्ज मे मूलधन कितना है, कानूनन उचित सूद कितना और अनुचित कितना है। अनुचित सूद चुकाने का प्रश्न ही नही उठता। फिर यह देखा जायगा कि उचित सूद और मूलधन मिलाकर कितना चुकाया गया। अगर कुछ ही रकम बची हो, तो उसे सपत्तिदान मे दान देने के लिए साहूकार से प्रार्थना की जायगी। इस क्रान्ति की करुणा साहूकार के हृदय को भी क्यो न छुयेगी ? उसीने खेती, सूखा आदि कठिन प्रसगो मे किसान की आवश्यकताएँ पूरी की। फिर वह गाँव का भला क्यो न चाहेगा ? उसका उपकार प्रेम से ही चुकाया जा सकेगा। क्या कभी पैसे से भी उपकार चुकाया जा सकता है ? साहूकार को इसका भान ही नही है।

अगर वह पूरा कर्ज सपत्ति-दान के रूप मे नही छोड़ता, तो शेष रकम गाँव की पैदावार से दस-पाँच वर्षो मे हफ्तेवार अदा की जायगी। गाँव की खेती या उद्योग के निमित्त मिले हुए सपत्ति-दान, साधन-दान या सरकारी मदद की रकम से यह कर्ज कभी न चुकाया जायगा। इस कर्ज की अदायगी गाँववालो की वढी हुई पैदावार से ही हर साल की जायगी। साहूकार विश्वास रखे कि कोई भी कर्ज डुबाया न जायगा। दस-पाँच वर्षो मे गाँव पुराने कर्ज से मुक्त हो जायगा। जो काम गत सौ-दो सौ वर्षो मे किसी कानून या सरकारी सहकारी वैंको से सध न पाया, वह दस ही पाँच वर्षो मे सध जायगा। गाँव पर से चिन्ता का वहुत वडा वोझ ग्राम-दान से पहले ही हल्का हो जायगा। भारत मे सर्वत्र ग्राम-दान होने पर याने 'भारत-दान' होने पर तो साहूकार का ही हृदय वदल जायगा। इसलिए जैसे-जैसे ग्राम-दान वढता जायगा, वैसे-ही-वैसे यह प्रश्न सरल होता जायगा। अतएव ग्राम-दान वढने चाहिए।

२. *प्रश्न* · खेती और उद्योग के लिए नयी पूंजी की जरूरत पडेगी। वह कहाँ से मिलेगी ?

उत्तर : आज पूंजी या पैसा अधिक क्यो लगता है ? इसीलिए कि वहुत-से लोग खुद काम नही करते, मजदूरो से करवाते है। अव जव सभी लोग मेहनत करने लगेंगे, तो पूंजी की जरूरत कुछ अंशो में कम हो ही जायगी। परस्पर श्रम-दान द्वारा मदद करने की वृत्ति वढ़ जाने से भी पहले जितना पैसा न लगेगा। इसी प्रकार पैसे के कारण हम लोग अनावश्यक चीजे खरीदते

हैं। यह वृत्ति भी कम हो जायगी। फिर भी कुछ पूंजी लगेगी ही। उसमे से कुछ रकम शहर के सपत्ति-दान और साधन-दान से मिलेगी। प्रत्येक कुटुम्ब कुछ वचत करेगा, गाँव को सम्पत्ति-दान देगा या कुछ अन्न भडार मे देगा। उससे भी कुछ पूंजी मिलेगी। फिर भी शुरू के दस-पाँच वर्ष कुछ पूंजी लगेगी ही। कम मामूली सूद पर सहकारी-समिति लेगी और सरकार की ओर से ग्राम-सहकारी-समिति लेगी और उसे गाँववालो को देगी। लेकिन कोई भी ग्रामीण व्यक्तिगत तौर पर केन्द्रीय सहकारी-समिति या सरकार से कर्ज न लेगा। अब से गाँव वाहरी सस्थाओ से सघटित रूप मे ही लेन-देन करेगा। सघटित रूप मे ही कर्ज लेना तय हो जाने पर विवाह जैसे अनुत्पादक काम के लिए कोई भी कर्ज न ले सकेगा। फलस्वरूप अनुचित कर्ज पर अपने-आप नियत्रण हो जायगा, जिससे गाँववालो को सरकार और केन्द्रीय सहकारी वैंक से शीघ्र ही कम सूद पर उचित मदद सुलभ हुआ करेगी। दस-पाँच साल वाद गाँव का सम्पत्ति-दान, अन्न-भडार, वचत और गाँव की पैदावार इतनी वढ जायगी कि दैनिक व्यवहार के लिए गाँवो को वाहरी पूंजी की जरूरत ही न लगेगी। इस वीच मामूली सूद का भार गाँव को सहना पडेगा। कर्ज उत्पादन के लिए ही मिलेगा।

२ प्रश्न : खुद की मालकियत की जमीन न होने पर लडके-लडकियो के विवाह कैसे होगे ?

उत्तर सारे भारत मे ग्रामदान हो जाने पर तो यह प्रश्न ही न रहेगा। तव तक सर्वत्र यह वातावरण वन जाने से कि, ग्राम-दान एक अच्छा काम है, गाँव के साथ सभी लोग सहानुभूति का

व्यवहार करेगे। 'हमारी जमीन साहूकार के हाथ या जूए मे नही गयी, वह तो सारे गाँव की हो गयी। हम गाँव मे ही रहते है, इसलिए हमारे हिस्से भी जोतने के लिए जमीन आयेगी। हम भूमि-हीन नही, भू-सेवक बन गये है'—इसी ध्येयनिष्ठा के कारण अनेक शहरी भाइयो की गाँव से सहानुभूति रहेगी। किन्ही सयानी लडकियो को यह भी प्रेरणा होगी कि हमारी शादियाँ ऐसे ग्रामदानी पुरुषार्थी गाँवो मे हो। विवाह जैसे आनन्द के अवसर पर कर्ज निकालकर पीढी-दर-पीढी उसके बुरे परिणाम भुगतते रहना कोई बुद्धिमानी नही।

४. *प्रश्न :* किसी गाँव मे जमीन कम और लोग ज्यादा हो, तो वहाँ की समस्या कैसे हल होगी ?

उत्तर : ग्रामराज्य मे जमीन की सिंचाई की पूरी सुविधा हो जाने के कारण कम जमीन मे भी आदमी का पोषण हो सकेगा। कुछ परती जमीन भी जोत मे आ जायगी। सुधरी हुई खेती से भी कम जमीन मे ज्यादा पैदावार होगी। इसलिए कम जमीन से भी अच्छी तरह गुजर हो जायगी। हम गाँव-गाँव ग्रामोद्योग भी शुरू करेगे। फिर भी अगर यह प्रश्न हल नही होता और पड़ोस के गाँव मे जमीन ज्यादा और आदमी कम हों, तो उस गाँव की जमीन इस गाँव की हद मे लाने के लिए पडोसी को तैयार करेगे। इसके लिए गाँव के नक्शे बदलने पडेगे। इसमे अड़चन ही क्या है ? ग्रामराज्य समझदार रहेगे और ऐसी अड़चनें सहज ही दूर हो जायँगी। अथवा हम लोग ज्यादा जमीनवाले गाँव मे वहाँ के कुछ लोगो को ही भेज देगे। वहाँ उन्हे जमीन मिल जायगी।

५. *प्रश्न* : ग्रामदान मे जमीन तो बाँटी जायगी। पर बैल-जोडी, हल आदि का प्रश्न हल कैसे हो ?

उत्तर ग्राम-दान का अर्थ है, हरएक के पास जो कुछ हो, सारा गाँव को समर्पित कर दिया जाय। फिर जो लोग मूल्यवान् जमीन दे देंगे, तो क्या वे बैल-जोडी और औजारो को न देंगे ?

६ *प्रश्न* : यह सब कानून द्वारा क्यो नही करते ? कानून से हुआ, तो हम लोग तैयार ही हैं।

उत्तर कानून से यह काम कभी हो नही सकता। कानून से खेती बाँटी जा सके या सामूहिक खेती भी हो पाये, लेकिन वह 'ग्रामराज्य' नही, 'दिल्ली-राज्य' होगा। फिर, कानून से टूटे हुए दिल भी जुट कैसे पायेंगे और इसके बिना ग्रामराज्य मे लोग मन लगाकर काम ही कैसे करेंगे ? ग्राम-दान मे अपने-अपने कुटुम्ब-भर को देखना छोड सभी को ग्राम-कुटुम्ब की चिन्ता करनी होगी। मजदूर-मालिको और गरीब-श्रीमानो के बीच पडी खाई को पाटना होगा। यह बात कानून-सा कानून कर पायेगा ? आखिर मद्य-निषेध कानून बनने से कितना काम हुआ ? एक बार जब लोगो के दिल बदल जाते हैं, तब कानून उस पर मुहर का काम कर सकता है। कानून से मालगुजारी गयी, पर मालगुजारो और जनता के बीच प्रेम-संबध निर्माण नही हुए। कारण मालगुजारो के दिल नही बदल पाये। लेकिन अगर आज मालिक अपनी जमीन गाँव को अर्पण कर देता है और मजदूर अपना श्रम, तो गाँव मे नव-चैतन्य भर जायगा।

पूंजीवादी देशो मे सौ मे दो-चार ही लोग मालिक हुआ

करते है, शेष मजदूर। लेकिन भारत जैसे कृपिप्रधान देश मे सत्तर-अस्सी प्रतिशत छोटे-छोटे कृपक मालिक है, पाँच वडे कृपक और वीस मजदूर। अव सत्तर-अस्सी लोगो के हृदय वदलने के सिवा कानून उनकी जमीन कैसे ले सकेगा ? और उनके हृदय वदल जायँ, तो वे ग्रामदान मे ही जमीन दे देगे। फिर तो कानून की ज्यादा जरूरत ही न रहेगी। इसीलिए केरल के विधिमंत्री ने स्पष्ट कहा है कि कानून से जमीन के प्रश्न हल नही हो सकते। लोगो का हृदय वदले विना क्राति न होगी। कानून से हृदय-परिवर्तन या नवीन मूल्यो की स्थापना नही होती। कानून वनने से परस्पर कटुता वढ़ना, कोर्ट-कचहरी आदि दोप तो उसमे हैं ही।

७. *प्रश्न :* जहाँ दो भाइयो मे आपस मे पटती न हो, वहाँ सभी गाँववालो की एकत्र खेती कैसे हो सकेगी ? वह कितने दिन तक टिक पायेगी ?

उत्तर : आखिर आज दो भाइयो की आपस मे क्यो नही पटती, इसका विचार करना होगा। आपस मे न पटने के अनेक कारण हैं, जिनमे एक मालकियत का हक भी है। अगर यह मालकियत ही मिटा दी जाय, तो झगडे की जड ही उखड जायगी। भाई-भाई मे हक और अधिकार की भावना रहती है। इसीलिए भाई ने थोड़ा भी कम-ज्यादा किया, तो उसका अपेक्षा-भग हो जाता है। परिणामस्वरूप भाई भाई से झगडने लगता है। लेकिन वही कोई मित्र कुछ थोडा-सा भी काम कर देता है, तो हम उसके कृतज्ञ वनते हैं। कारण मित्र मे कर्तव्य-भावना प्रवल होती है, हक की भावना नही। ग्राम-दान से

छोटी-सी सामूहिक खेती का प्रयोग सफल हुआ करे, गाँव की खरीद-बिक्री जैसे सहकारी काम यशस्वी होने लगे, तो व्यक्तिगत खेती का क्षेत्र कम होकर सामुदायिक खेती का क्षेत्र बढ जायगा।

११ प्रश्न : ग्रामराज्य का अर्थ है, पुरानी ग्रामीण व्यवस्था को पुन लौटाना। इससे प्रगति की घडी की सूई पीछे घुमाने जैसा ही होगा। ऐसे ग्रामराज्य से जीवनस्तर बेहद नीचे उतर आयेगा। सर्वोदय को आधुनिक विज्ञान और यत्र से घृणा होने के कारण सभी लोग फिर से दारिद्र्य मे पचने लगेंगे।

उत्तर ये प्रश्न नही, आक्षेप हैं। आज की बीसवी सदी के ग्रामराज्य पुराने ग्रामराज्य जैसे न रहेगे। घडी की सूई आगे ही घुमेगी, कारण विज्ञान भी रहेगा और हिंसा भी मिट जायगी। विज्ञान का अहिंसा से ब्याह कराये विना न तो आज की दुनिया टिक पायेगी और न सुखी ही होगी। सर्वोदय यत्र का विरोधी नही, पर उसका अन्धपुरस्कर्ता भी नही है। जो यत्र मानव के कल्याण के पोपक हैं—जैसे घडियाँ, रेले, साइकिलें आदि—वे अवश्य रहेगे। लेकिन मानव-जाति का विनाश करने-वाले सहारक यत्र समाप्त हो जायँगे। उत्पादक यत्रो मे कुछ रहेगे, तो कुछ छोड भी दिये जायँगे। परती जमीन उपजाऊ वनाने के लिए ट्रैक्टर का उपयोग करेंगे। लेकिन उपजाऊ जमीन पर मशक्कत के लिए वहुत-से वैलो के रहते ट्रैक्टर का उपयोग कभी न किया जायगा। यह सव विवेक से तय करना होगा। सर्वोदय मे विज्ञान और अहिंसा का मेल होने के कारण युद्धजन्य दारिद्रय और दु खो से मानव वच जायँगे।

१२. प्रश्न : ग्रामदान के वाद ग्राम-राज्य या निर्माण-कार्य की जिम्मेदारी किस पर होगी ? उतने ही ग्राम-दान प्राप्त किये जायँ, जितनो के नव-निर्माण का उत्तरदायित्व भूदान-कार्यकर्ता सँभाल पाये । अन्यथा केवल ग्राम-दान प्राप्त करने से क्या लाभ है ?

उत्तर : केवल ग्राम-दान से भी लाभ है । विषमता मिटेगी । पहले-पहल गाँव मे 'समाज' बनेगा । सिर्फ समता से ही गरीबों की आय दुगुनी-तिगुनी हो जायगी । मजदूर मन लगाकर काम करने लगेंगे । इससे उत्पादन वढेगा । ग्राम-दान का अर्थ है, सुख-दुख वाँट लेना ! सिर्फ वाँट लेने से भी दुख कम होता और सुख वढता है ।

ग्राम-दान के वाद निर्माण की जिम्मेदारी तो सारे समाज पर है । विशेषत सभी रचनात्मक काम करनेवाले लोगो एव संस्थाओ, राजकीय दल और सरकार, इन सवका काम है । सर्वाधिक जिम्मेदारी गॉव की जनता पर है । जिस जनता ने ग्राम-दान दिया, उसे ही ग्रामराज्य की आगे की चढाई चढनी चाहिए । इसलिए यह कहना ठीक नही कि जितने गाँवो मे निर्माण-कार्य कर सके, उतने ही गाँव ग्राम-दान मे प्राप्त किये जायँ । इसके विपरीत जितने ग्राम-दान वढेंगे, उतने ही परिमाण मे हवा वदलेगी । उससे आगे का निर्माण-कार्य भी सरल हो जायगा । इसलिए ग्राम-दान पाने मे रुकावट न आने दे । ग्राम-दान ही आगे के सारे निर्माण-कार्यो की नीव है ।

१३. प्रश्न : ग्राम-दान का विचार तो अच्छा है । देश के वड़े-वड़े नेताओ, धर्म-गुरुओं और अर्थशास्त्रियो ने इसकी प्रशसा

की है। लेकिन इतना बडा त्याग जनता कैसे कर पायेगी ? क्या भूदान-कार्यकर्ताओ को क्रम-क्रम से आगे बढना जरूरी न था ?

उत्तर : जब-जब आगे कदम बढाया जाता है, तभी पिछला कदम काफी माना जाता है। कहा जाता है कि व्यर्थ की जल्दबाजी करने से नुकसान होगा। जिस समय भूदान के लिए छठे हिस्से की माँग की गयी, उस समय वह भी भारी मालूम पड रही थी। अब ग्राम-दान का विचार सामने आने पर लोगो को छठे हिस्से की माँग हलकी मालूम पडने लगी है। सत्ताईस सौ गाँववालो ने ग्राम-दान देकर यह सिद्ध कर दिया है कि ग्राम-दान का विचार मानव-जाति के वश की बात है। वस्तुत यह त्याग का कार्यक्रम न होकर प्रेम बढाने का कार्यक्रम है। इसमे किसीको देने की अपेक्षा आपस मे बाँट खाना है। एक-दूसरे के सुख-दुःख मे सहभागी बनकर ग्रामराज्य स्थापित करना है। गाँव का गोकुल बनाना है। गत पाँच वर्षो से सतत छठे हिस्से का प्रचार चालू रहा और लाखो लोगो ने उचित हिस्सा दिया भी। पिछले पाँच वर्षो मे स्पष्ट बता दिया गया कि यह हिस्सा समता का, स्वामित्व के विसर्जन का पहला कदम है। अब पाँच वर्ष तक प्रचार और कुछ आचार करने के बाद भी अगला कदम न उठाया जाता, तो वह अनन्त काल तक प्रतीक्षा ही करना हो जाता !

१४ प्रश्न मान लीजिये कि किसीकी ग्रामदानी गाँव मे जमीन है और उसे उसने ग्रामदान मे दे भी डाला। पर बाहर के दूसरे गाँव मे भी उसकी जमीन है, जिसे उसने ग्रामदान मे नही दिया। तो, क्या ये महाशय ग्रामदानी समाज के सदस्य बन सकते हैं ?

उत्तर . विनोवाजी कहते है कि अगर उसने ग्रामदानी गाँव की सारी जमीन दे दी हो और वहाँ रहता भी हो, तो वह ग्रामदानी ग्राम-सभा का सदस्य वन सकता है।

१५. प्रश्न : क्या वह एक ही समय मे अनेक ग्रामदानी ग्राम-सभाओ का सदस्य रह सकता है ?

उत्तर : विनोवाजी कहते हैं कि रह सकता है। लेकिन वह जहाँ नही रहता, उस गाँव की ग्रामसभा का सदस्य बनने का वह आग्रह क्यो करता है ? कारण, इतनी जगहो की ग्राम-सभाओ की वैठको में उपस्थित रहना उसके लिए सभव नही। इसलिए जिस गाँव मे वह नही रहता, वहाँ का सदस्य वनने और वहाँ से कुछ आर्थिक लाभ उठाने का वह आग्रह न रखे।

१६. प्रश्न : ग्रामदानी गाँव का कोई आदमी वाहर नौकरी करके पैदा करता है, तो क्या वह उस संपत्ति को गाँव को दे डाले ?

उत्तर . विनोवाजी कहते हैं कि हरएक वात प्रेम और विवेक से करनी चाहिए। जमीन दान मे दे दी, पर नौकरी करना हो, तो वह और कुछ माँगेगा ही नही। लेकिन अगर उसे पूरा न पड़ता हो, तो वह दूसरो से कम जमीन माँग सकता है। अथवा दूसरो के वरावर ही जमीन लेकर वह अपनी नौकरी का पैसा गाँव को सपत्ति-दान मे दे सकता है।

१७. प्रश्न : जो ग्राम-दान मे शामिल नही होता, क्या गाँव-वाले उसकी जमीन ठीके पर ले सकते हैं ? उसका उचित हिस्सा मिलने के लिए क्या उसे कानून का कुछ आधार मिल सकता है ?

उत्तर : ग्रामदान में जमीन न देनेवाला व्यक्ति खेती पर श्रम न

करनेवाला बडा किसान होगा । वह ग्रामदान से पूर्व अपनी सारी खेती मजदूरो से ही करवाता होगा । लेकिन ग्रामदान के मजदूर उससे व्यक्तिश बातचीत न करेगा, ग्राम-सभा ही उससे बातचीत करेगी । वह कहेगी कि आपका खेत हम वडे प्रेम से जोतेंगे और पैदावार आपके घर पहुँचा देंगे। इस तरह हम उसे प्रेम से जीतेंगे।

विनोबाजी कहते है कि "हमे 'गोपालकाला' करना है । प्रेम ही हमारा साधन है । कानून, करार और शर्ते हमारे पास नही। अन्दर आइये और प्रेम कीजिये । आपको प्रेम मिलेगा ।"

१८ प्रश्न - यह सच है कि ग्रामदान से सबको समान आमदनी होगी। लेकिन क्या इससे लोगो मे कर्तृत्व की प्रेरणा कम न होगी ? लोग यह आशा रहने पर ही कि "अधिक पुरुषार्थ करेंगे, तो अधिक सपत्ति मिलेगी", ज्यादा परिश्रम करते हैं ।

उत्तर विनोबाजी कहते हैं क्या घर मे पिता इसलिए ज्यादा काम करता है कि उसे खुद को ज्यादा रोटियाँ मिलेगी ? परिवार मे यह चल नही सकता कि जो जितना कमाये, उतना खाये । फिर भी काम करनेवाले को उत्साह रहता ही है ! आप कह सकते है कि यह वात परिवार मे तो चल सकती है, समाज मे यह उत्साह टिक नही पाता। लेकिन वह इसीलिए नही टिकता कि समाज मे ऐसी अधार्मिकता व्याप्त है । समाज मे कई बुरी वातें चलती हैं, पर क्या हम उन्हे ठीक कहेगे ? अवश्य ही आज यह चलता है कि जो ज्यादा कमायेगा, उसे भोग का अधिकार भी ज्यादा होता है । पर यह गलत विचार है, अधर्म है । इसके कारण कर्म की प्रेरणा नही, सग्रह की प्रेरणा ही वढती है।

मैं खूब पैसे कमाता और संग्रह करता हूँ, तो आलसी बन जाता हूँ। मेरी सन्तान भी आलसी और विलासी बनती है। कर्म-प्रेरणा क्षीण हो जाती है। इसके विपरीत समता अत्यन्त सुरक्षित चीज है। किसान टीले फोड और गड्ढे पाटकर सारी जमीन समान करता है, जिससे अच्छी फसल होती है। जो न्याय खेत के लिए, वही समाज के लिए भी लागू है। समता मे सर्वाधिक शक्ति है। तराजू बिलकुल समान होती है। दुनिया के सारे व्यवहार तराजू से चलते है। न्याय भी समता के आधार पर ही चलता है। फिर जीवन मे समता आने से नुकसान का भय क्यो? अगर अधिक पैसे मिलने से मुझे ज्यादा काम करने की प्रेरणा मिलती है, तो दूसरे को मेरे पैसे लूट लेने की भी प्रेरणा मिलती है। फिर क्या वह भी उत्साह जरूरी है? साराश, यह सारा दुष्टचक्र है। इसलिए ग्राम-दान से मत डरिये, किसी तरह का सकोच मत कीजिये। समता से आपकी शक्ति ही बढेगी।

फिर लोग सिर्फ पैसे के लिए ही तो काम नही करते! आज भी कितने ही लोग पुण्य के लिए, यश-प्रतिष्ठा के लिए, न्याय और सामाजिक सेवा के आनन्द के लिए काम करते ही है। क्राति के बाद ये मूल्य समाज मे अधिक-से-अधिक प्रतिष्ठित होगे। पैसे का मूल्य नष्ट हो जायगा। लोगो की कर्तृत्वशक्ति कम न होकर बढती ही जायगी।

• • •

सत्तावन की पुकार

: ६ :

ग्रामवासी बन्धुओ ! हम लोग एक ही गाँव मे पैदा हुए और एक ही गाँव मे बढे। यही की धरतीमाता ने हमे पाला-पोसा। हम खुद की माँ पर भी अपनी मालकियत नही मानते। फिर यह धरती तो हजारो वर्षो से लाखो, करोडो की माता है। यह तो सर्वश्रेष्ठ माता है। इसके हम मालिक कैसे ? यह हमारे जन्म से पहले भी थी और इसीकी गोद मे हम अन्तिम विश्राम पाते हैं।

जो बात जमीन की, वही सपत्ति की भी ! सपत्ति का अर्थ ही है, सब लोगो द्वारा प्राप्त। सपत्ति बहुतो के सहयोग के विना निर्मित ही नही हो सकती। फिर उसका कोई एक ही मालिक कैसे ?

इसलिए व्यक्तिगत मालकियत की कल्पना सचाई से कोसो दूर है। मूलत यह कल्पना अपवित्र है। वह आज के अनेक पापो की जड है। इसलिए आओ, हम सब पाप का यह वोझ उतार-फेक मुक्त हो जायँ और ग्राम-धर्म की दीक्षा लें। सभी मिलकर गाँव को सुखी वनाये। इससे कलियुग सत्ययुग वन जायगा। जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा !

भूदान-समितियो के विसर्जन के कारण आज ग्रामदान सभीका काम हो गया है। अतएव सत्तावन मे यह काम पूरा करने के लिए सभीको आगे आना चाहिए। लेकिन हनुमानजी

की तरह आज जनता को भी अपनी शक्ति का भान नही है। जामवत की तरह यह भान करा देने का काम कार्यकर्ता कर रहे है।

गाँवो और शहरो मे ऐसे अनेक भाई और बहने हैं, जो इस काम के लिए सर्वस्वत्याग तो नही कर पाते, पर सहानुभूति अवश्य रखते है। वे स्वय को घर की चहारदीवारी मे कैद न कर ले और न बाल-बच्चों तक ही खुद को सीमित रखे। वे यह सकल्प करे कि गाँव ही मेरा घर है। मेरी गृहस्थी और गाँव की गृहस्थी अलग नही। इसलिए कभी भी अपने स्वार्थ को गाँव के हित के विरुद्ध न जाने दूँगा। मैने जमीन पर से अपनी मालकियत छोड़ दी। वे यह तय करे कि सत्तावन मे हम इस पाप से मुक्त होगे और फिर उसकी घोषणा भी कर दे। यह प्रतिज्ञा ले कि ग्राम-दान और ग्राम-राज्य का विचार ग्रामीणो मे उठते-बैठते, चलते-फिरते फैलाता जाऊँगा।

गरीब लोग अपनी जमीन या श्रम देकर खुले तौर पर ग्राम-दान की माँग करे। जब बच्चा रोने लगता है, तभी उसकी भूख प्रकाश मे आती है और फिर माँ उसे शान्त करती है। ऐसे दाता लोग गाँव-गाँव सभाएँ कर ग्राम-दान की माँग करे। भू-माता की सेवा करने का हक सभीको मिलना चाहिए। गरीब व्यसन छोड़ दे। आलस झाड़ दे। यह समझकर कि आज नही तो कल सबको जमीन होकर रहेगी, पूरे उत्साह से काम करे। इससे उनकी प्रतिष्ठा बढेगी और उनकी माँग प्रभावकारी होगी।

गरीव लोग श्रीमानो पर प्रेम करें। जो (श्रीमान्) ग्राम-दान मे शामिल नही होते, उन पर तो और भी अधिक प्रेम करे। उन्हे प्रेम से समझाये कि अगर आप अलग रहना चाहते हो, तो खुशी से रहे। जब आप बुलायेंगे, तभी आपके खेतो पर मन लगाकर काम करेंगे। फिर जमीदार भी सोचेंगे कि ग्रामदान से ये मजदूर दयालु और नेक वन गया, पैदावार भी अच्छी होने लगी, तो क्यो न मैं भी ग्राम-दान मे शामिल हो जाऊँ ? अगर हम इस तरह बर्ताव करें, तो निश्चय ही जमीदार वश मे आ जायेंगे। मँगरौठ का शेष एक जमीदार अभी-अभी ग्राम-दान मे शामिल हुआ है। यह गॉवो के लिए ग्राम-दान का कार्यक्रम है।

श्रीमान् लोग भी सच्चे देवता को भोग चढायें। उधर वे देव-दर्शनार्थ हिमालय और समुद्र के किनारे तक जायँगे और इधर उनके गाँव मे ही सच्चा देव अपने भक्तो की बाट जोहता रहे, यह ठीक नही। वह भूखा मर रहा हो, सर्दी से ठिठुर रहा हो और प्यास से छटपटा रहा हो, पर उसकी परवाह ही न की जाय, यह कहाँ का धर्म है ? आज इसी दरिद्रनारायण को भोग चढाने का समय आ गया है। पडोसी के दु खी, रोगी, अज्ञानी और वेकार रहते कौन श्रीमान् सुखी रह सकता है ? खाना-पीना, मौज उडाना और अपने वाल-वच्चो को देखना तो पशु भी करता है। हम मानव है। जो मनन और विचार करे, वही मानव है। इसलिए श्रीमान् लोग अपनी करुणा को जगायें। वे निश्चय करे कि जव तक मेरे गाँव के सभी लोग न खा लेंगे, तव तक मुझे खाना अच्छा न लगेगा। जव तक गाँव के सभी वालक शिक्षित न हो जायें, तव तक मेरे वच्चे के पढने मे कोई सार नही। वे

सवको काम देने और गाँव को सुखी वनाने मे ही अपनी सारी शक्ति, वुद्धि और मुक्ति का विनियोग करे।

जव यह देश अग्रेजो के चगुल मे रहा, तव यहाँ महात्मा गाधी, मोतीलाल नेहरू, वैरिस्टर चितरजन दास, देश-गौरव सुभाष, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, सरदार पटेल, पडित जवाहरलाल नेहरू, वावू राजेन्द्रप्रसाद, खान अव्दुल गफ्फार खाँ आदि एक-से-एक तेजस्वी नेता पैदा हुए और उन्होने अपने घर-द्वार का होम कर दिया। उसीसे देश मुक्त हुआ।

आज हमे स्वतत्र हुए दस वर्ष हो गये। अव भी भारत मे करोडो ग्रामीण शोषण, दारिद्रय, अज्ञान, रोग-दोष आदि से गुलाम वने हुए है। वे अपमान, अन्याय और अत्याचार सहते जा रहे हैं। इस गुलामी से छुटकारा पाने के लिए हम आगे वढे। शोषण-विहीन और शासन-मुक्त समाज की स्थापना याने 'सर्वोदयी समाज' वनाना हमारा ध्येय है। महात्मा गाधी की तरह सन्त विनोवाजी इस काम के लिए राष्ट्र को पुकार रहे हैं। इसे अखिल भारतीय ख्यातिप्राप्त वावू जयप्रकाश नारायण, गुजरात के रविशकर महाराज, उत्तर प्रदेश के वावा राघवदास, दक्षिण के एम० जगन्नाथन्, उत्कल के सैकड़ो ग्राम-दान प्राप्त करनेवाले विश्वनाथ पट्टनायक आदि सर्वस्व-त्यागी अनेक नरवीर प्राप्त हैं। तिरसठ के वूढे विनोवाजी गत छह वर्षो से प्रतिदिन पैदल घूम रहे हैं। उन्होने अव तक वीस हजार मीलो की पद-यात्रा की है।

उन्होंने पुकारा है कि भारतमाता मुक्त हो गयी, पर आज

भी हमारी धरतीमाता ग्रामीणो की तरह ही गुलाम है। इसलिए उसे सत्तावन में हम लोग मुक्त करें। गाँव-गाँव ग्राम-दान करें।

गरीबो और श्रीमानो! ग्रामीणो एव नागरिको! नव-युवक भाइयो तथा बहनो! क्या यह पुकार आपको सुनाई नही देती? भारतमाता की मुक्ति के लिए जैसे महात्मा गाधी की पुकार सुनते ही लाखो लोग दौड पडे, वैसे ही हम लोग भी इस ऐतिहासिक सत्तावन के साल मे धरतीमाता की मुक्ति के लिए सन्त विनोवा की पुकार पर क्या लाखो की सख्या मे दौड न पडेंगे? जिले-जिले से अनेक कार्यकर्ता घर-द्वार छोडकर यह कार्य इसी साल पूरा करने के लिए निकल पडे हैं। किसीने पटवारगिरी छोडी, किसीने मास्टरी से इस्तीफा दिया, किसीने वकालत से विश्राम लिया, वहनो ने घरो और बाल-वच्चो को त्यागा, अविवाहितो ने अपने विवाह स्थगित कर दिये, बूढे लोग अपने एक-लौते वच्चे का व्याह छोड तानाजी की तरह आगे आये! ऐसे अनेक भक्तो की पुण्य-गाथाएँ सन् सत्तावन मे तैयार हो रही है।

इसलिए हम सव उठें और धरतीमाता को मालकियत की वेडियो से छुडाये। इसीसे ग्रामराज्य निर्माण होगा। यही सन् सत्तावन का सन्देश है। परमधर्म उपस्थित होने पर स्वधर्म भी त्यागना पडता है। भगवान् ने गीता मे कहा भी है *'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'*—सभी धर्म छोड एकमात्र मेरी शरण आओ। वयालीस की तरह ही सत्तावन की यह माँग उपस्थित है। पद्रह साल हमने खूव विश्राम कर लिया। अव

समय वहुत थोडा रह गया है। हम यह काम इसी वर्ष पूरा कर डालें।

ग्राम-दान दुनिया से युद्ध और लोभ की हवा शुद्ध करने-वाला आत्म-वम है। उधर अणु-वम के विस्फोट हो रहे है। इधर अपने-अपने गॉवो मे ग्राम-दान कर इसी साल हम भी आत्म-वम का विस्फोट करे और विश्वशान्ति को निकट लाये। सत्ता-वन के साल मे अपने-अपने घरो मे वैठकर पुराने कामो मे रमे रहना पाप है। अट्ठावन मे ये सव काम हम ग्राम-दान की नीव पर भलीभॉति कर सकेगे। लेकिन एक बार सत्तावन का साल हाथ से निकल जायगा, तो फिर वह वापस न लौटेगा। सत्तावन हिन्दुस्तान के भाग्योदय का वर्ष है। यही ग्राम-दान का सन्देश है। ग्राम-राज्य के लिए सत्तावन मे सभी गाँवो मे ग्राम-दान! धरतीमाता की मालकियत के हक की वेडियो से मुक्ति! यही सत्तावन की पुकार है!

• • •

परिशिष्ट १

ग्रामवासी-नगरवासी-संवाद

[विनोबा]

गाँव मे कोई बालक अपनी माँ से मक्खन माँगता है, तो वह उसे नही मिलता। कहते हैं, 'यह बेचने के लिए है।'—यह सारी चर्चा भागवत मे कृष्ण-यशोदा-सवाद मे आती है। कृष्ण कहता है 'मक्खन बाँट डालो।' यशोदा कहती है 'नही, हम उसे बेचेंगे।' कृष्ण उत्तर देता है 'जिस मथुरा शहर मे मक्खन बेचा जाता है, वहाँ पैसा तो है, पर उसके साथ ही कस भी है। इसलिए अगर कस के पजे से छुटकारा पाना चाहो, तो मक्खन बाँटकर खा जाना चाहिए।' कृष्ण ने मक्खन बाँटकर खा डाला। मैं आपसे पूछता हूँ 'आप दूध, मक्खन और फल बेचते क्यो है? खाते क्यो नही? चाहे तो खाने के बाद बचने पर बेच दे। क्या आपको ये चीजे नही भाती?'

जीवन के लिए आवश्यक हर चीज ग्रामीणो के पास मौजूद है। श्रीमानो के पास तो सिर्फ कुछ पीले-सफेद पत्थर (सोना-चाँदी) और कुछ हरे-नीले कागज (नोट) हैं। इनके सिवा उनके पास धरा ही क्या है? जिनके पास कुछ नही, वे श्रीमान् माने गये और जिनके पास सब कुछ है, वे गरीब—इसीको 'माया' कहते हैं। आपको खुद ही अपनी चीजें तैयार कर उनका उपभोग करना चाहिए। अगर आप ऐसा करे, तो शहर के लोग खुद आपके पास दौडते आयेंगे।

फिर शहरवाले कहेगे 'आखिर आजकल बाजार मे मक्खन

क्यो नही आता ?' वे आपसे मक्खन माँगने आयेगे। आप कहेगे 'मक्खन बनता है, पर बच्चे खा डालते है।' वे कहेगे : 'हम आपको ज्यादा पैसे देगे।' आप उत्तर देगे · 'आपके पत्थर और कागज आपको ही मुबारक रहे। हमे उनसे क्या लाभ !' वे घबराकर पूछेगे . 'फिर मक्खन मिलने का और कोई रास्ता है ?' आप कहेगे : 'है, लेकिन आप अपने नाम से हमारे यहाँ एक गाय रखिये और उसकी सेवा मे मदद दीजिये।' वे पूछेगे : 'क्या गाय रखनी ही पडेगी ?' आप कहेगे · 'हाँ, रखनी ही पडेगी। इतना ही नही, उसकी सेवा के लिए रोज एक घंटा यहाँ आना भी पड़ेगा।' वह कहेगा · 'गाय तो रखता हूँ, पर उसकी सेवा मुझसे न बन पड़ेगी। मै बूढा हो गया हूँ !' आप कहेगे . 'आप बूढ़े है, तो अपने बच्चे को भेजिये।' वह कहेगा : 'मेरा लड़का तो कॉलेज जाता है। वह किसीका भी काम नही करता। फिर गाय की सेवा कैसे करेगा ?' आप कहेगे . 'वह कोई भी काम नही करता, तो मक्खन भी खाता न होगा।' शहरी आदमी कहेगा . 'नही, मक्खन तो वह रोज खाता है।' आप कहेगे · 'आप आयें या अपने बच्चे को दीजिये। किसीको तो आना ही पडेगा।' वह कहेगा : 'मै ही आऊँगा, पर गाय का दूध मुझे दुहने नही आता।' आप हँसकर जवाब देगे 'ठीक, शहरी लोग अनाड़ी होते है। उन्हे दूध कहाँ से दुहने आये ? लेकिन गोबर वगैरह तो उठा सकेंगे।'

फिर शहरवाला आपके यहाँ आयेगा। आप उससे सेवा करवायेगे और उसे मक्खन देते जायेंगे।

परिशिष्ट : २

ग्रा म दा न-प त्र

गाँव का नाम———— मौजा न० ——— तहसील——— जिला— — प्रदेश – —

पू० विनोवाजी के कथनानुसार सारी जमीन बुद्धि ग्रौर श्रम भगवान् के—गाँव के हैं, यह वात मुझे जँच गयी ग्रौर उसके ग्रनुसार मेरे पास की निम्नलिखित तपसील की जमीन का हक मैं सारे ग्राम-समाज को ग्रपने इस लेख द्वारा ग्रर्पण कर रहा हूँ। इसी तरह ग्रपनी सारी बुद्धि ग्रौर श्रम-शक्ति भी ग्राम-समाज को ग्रर्पण कर रहा हूँ। ग्राम-समाज जितनी ग्रौर जो जमीन जोतने ग्रौर गुजारे के लिए देगा, उसे मैं खुशी से ग्रौर ग्रपनी सारी शक्ति लगाकर जोतूंगा ग्रौर गाँव की पैदावार वढाऊँगा। मेरे इस विश्वास के लिए भगवान् साक्षी हैं।

तारीख गाँव का कुल क्षेत्र कुटुम्ब-सख्या जन-सख्या

नाम (पूरा) स० न० क्षेत्र ग्राकार हक का प्रकार हस्ताक्षर